माण्डवीक जिगेसा

आभा झा

माण्डवीक जिगेसा

माण्डवीक जिगेसा

आभा झा

मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली

माण्डवीक जिगेसा

कवयित्री : **आभा झा**
116 बी, अर्जुन नगर, बी-6, सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029
सम्पर्क : 9871053391
ईमेल : abhajha15@gmail.com

ISBN : **978-81-986846-9-1**

प्रकाशक : **मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली**
बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
संपर्क: 9431693352
ईमेल: maitreyipublication@gmail.com

© : **आभा झा**

प्रथम संस्करण : **2026**
मूल्य : **₹ 000**

कला संपादन : **मणिशंकर कुमार**
संपर्क : 9312766899
ईमेल : kmanishankar@gmail.com

मुद्रक : **आर.के. ऑफसेट प्रोसेस**
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Mandavi Jigesa by Abha Jha
First Edition : 2026, Price : ₹ 000

समर्पण

स्त्रीक अन्त:करणक गप सुनबाक इच्छा
रखनिहार समस्त सहृदयवृन्दकेँ ।

अनुक्रमणिका

- उचिती-मिनती 9
- भरत-प्रिया बनाम सीतानुजाक अन्तर्द्वन्द्व 13
- श्रुतकीर्ति 36
- अर्जुनक उत्ताप 40
- याज्ञसेनीक आलाप 49
- कुन्तीक व्यथा 60
- अहिल्याक प्रश्न 66
- बालि-पत्नी तारा 69
- वृहस्पति-पत्नी तारा 72
- मन्दोदरीक मुखसँ 75

उचिती-मिनती

प्रज्ञा प्रकाशदा वाणी वाचि प्राणं प्रबोधयेत्
लोकप्रबोधनं येन मम वाचाऽपि सम्भवेत् ।

स्त्रीक मुखसँ बहरायल सार्थक बोल हमरा बड्ड पसिन्न अछि, तेँ ओ सुनबा लेल सदति उताहुल रहैत छी।जे सुनल जा सकल, ओ मनोयोगपूर्वक सुनैत छी, ओकर भावार्थ गुनबाक उपक्रम करैत छी आ ओहि कथनक ओजन अकानैत रहैत छी। ओना बोली त' बोली थिकै, ओहिमे स्त्री-पुरुषक विभेद करबाक प्रयोजन सामान्य स्थितिमे नहि होयबाक चाही, ई बुझितो सामाजिक परिवेशमे औखन देखाइत भेदक देबार मनक कोनमे एकटा पक्षपात आनि दैत अछि। प्रायः देखैत रहलहुँ अछि जे अन्तस् मे जलधिक ज्वार होइतो कहबा लेल ठोर फड़फड़ाक' रहि जाइत छैक, हृद्गत गपक दम कण्ठ धरि अबैत अबैत दम टूटि जाइत छैक आ एकटा मारुक चुप्पी सभतरि पसरि वातावरणमे श्मशानक सन्नाटा पसारि दैत छैक। ई स्थिति कोनो समाज लेल हितकर नहि होइछ। तेँ संवाद जरूरी होइत छैक - मनोगत भावक सम्प्रेषण लेल, उलहन- उपराग लेल, संबंधमे ताजगी लेल, भ्रमक निराकरण लेल, मत-वैभिन्यक संतुलन लेल, संप्रेषणात्मक दूरी कम करबा लेल, अपन इच्छा-अनिच्छा व्यक्त करबा लेल, परस्पर विश्वास लेल। मुदा काम्य होइतो यथार्थ ई नहि, से सभ बुझिते छी।इहो सत्य जे शिक्षाक प्रसारक संग, विचारक प्रबुद्धताक संग आ तर्कक प्रबलताक संग बहुत रास सुखद परिवर्तन भेलै अछि, मुदा औखन बहुत किछु करणीय शेष छैक।

अस्तु, गप करैत छलहुँ संवादक, खास कए स्त्रीक मुक्त स्वरक आ ओहिसँ अपन आत्मीय अनुरागक। किछु पोथी-पत्राक सान्निध्य, किछु यथार्थक भीतर आदर्श तकबाक प्रवृत्ति आ सर्वत्र शालीनता ओ मर्यादादिक शाब्दिक जालक पाछाँ नुकायल असमान सामाजिक दृष्टिक प्रति विरोध-भाव हमरा सदिखन

सशङ्क आ सतर्क रखैत अछि ।ओहन मे सामाजिक परिवेशमे उक्त त' उक्त, अनुक्तो गप सभ अनायासेँ नहि जानि कोना हमर श्रवणरन्ध्र धरि पहुँचि जाइत अछि, हमर मनस्तलकेँ स्पर्श कए उत्तर-प्रत्युत्तरक मानसिक आयास करबै लगैत अछि आ ओहिमे संतोष पबै अछि। एहि ठाम ई प्रश्न उठि सकैछ जे बाजब प्रिय अथवा संतुलित बाजब प्रिय? निस्संदेह संतुलित आ समरस बाजब प्रिय, मुदा युग-युगादिसँ मुँह पर लागल जाबी जखन खुजैत छैक, त' खूब संभव छैक जे कदाचित् शब्द नियंत्रण-रेखा टपि जाइ ।एहनो स्थितिमे ऊपरसँ शालीन बुझाइत मुदा दमघोंटू चुप्पीक तुलनामे उच्छृंखल सन देखाइत शब्दो नीक होइछ, कारण ओ क्षणिक रोषक कारण भनहि बनय, किन्तु अवसादक आधार नहि बनैछ ।अही कारणसँ आइ-काल्हि मनोविश्लेषक सभ सेहो संवादात्मक उपचार पर अधिक बल दैत छथि।

आब किछु गप एहि पोथीक प्रसंग - 2024 मे शृंखलाबद्ध काव्यक रूपमे 'सीताक स्वर'अनबाक प्रयास कएलहुँ, जतय त्रेताक सीताक चरित्रक संग आधुनिक चिंतनक सामञ्जस्य मूलमे छल ।तखनहिसँ हुनक बहिन सभ सेहो मनस्तलमे बूलै छलथि, कखनो अपन प्रसन्नता आ पीड़ा बतबैत छलथि, त' कखनो प्रश्नक तीव्र कटार भोकैत छलथि ।आकुल प्रश्नक शृंखला हमरा सोचै लेल विवश करै छल जे जखन प्रत्येक व्यक्ति एक रंग महत्त्वपूर्ण होइत अछि, तखन ओकर अवस्थिति जँ काव्य वा इतिहासक मानचित्रसँ बिला जाइ त' ओ स्थिति काम्य त' नहिए। परिणामत: अपन बुद्धिक सीमामे 2025मे 'बजितथि जँ उर्मिला' शीर्षकसँ दीर्घकविता प्रकाशित करबौलहुँ।आब बचलीह माण्डवी ओ श्रुतकीर्ति! आह! जखन रामायणक आधारभूमि पर हिनका दुहू पर विचार करब प्रारंभ कएल, त' चारू मैथिल कन्या एक पर एक बुझाइ पड़लीह ।एकटा मैथिल स्त्री लेल मैथिली चारू बहिनक अतुलनीय शक्ति, अदम्य साहस, अथाह धैर्य, अरोध्य सहनशक्ति आ अपूर्व कर्त्तव्यनिष्ठा सदैव गर्व आ प्रेरणाक विषय होइत छैक ।एहि गौरव आ आनन्दानुभूतिक आवेगमे किछु टूटल-फूटल शब्दक माध्यमसँ हिनकहु स्मरणाञ्जलि देबाक ई छोट-छीन प्रयास कएल अछि। प्रयत्न इहो रहल अछि जे सीताक संग हुनक तीनू बहिनक प्रसंग विषयोपस्थापनक क्रममे कतहु पिष्टपेषण नहि हो। पौराणिक वा ऐतिहासिक पात्र पर लिखबामे

एकटा प्रत्यक्ष खतरा रहिते छैक- एहिमे नव की? ज्ञात विषयक शब्दान्तर लोक किऐक पढ़ौ?

ई प्रश्न पूर्णतः समीचीन छैक आ एकर उत्तरमे एतबा विश्वास दिया सकैत छी जे राजा जनकक दुन्नू आ कुशध्वजक दुन्नू पुत्री भनहि परिचित पात्र छथि, मुदा हुनक चरित्र गढ़बा काल दू-तीन रामकथाक आधार न्यों मे देल अछि, शब्दक पजेबाक बीच आधुनिक चिंतनक गिलेबा लगाओल अछि आ आंखिकेँ सोहनगर लगबा जोगर रंग- टीप देल अछि।

स्त्रीक मनक भीतर पैसब स्त्रियो लेल आसान नहि।ई जटिल मनोवैज्ञानिक ओ संवेगात्मक प्रक्रिया थिक। एहि लेल समानुभूति, संवेदना ओ साहस जरूरी होइ छै।हम भाग्यशाली बुझै छी स्वयंकेँ जे ई साहस हमरा सभ भाइ-बहिनकेँ नेनहिसँ माता-पितासँ भेटैत रहल अछि। कृतज्ञता शब्द छोट बुझाइत अछि हुनका दुहू लेल। एतदतिरिक्त पितृकुल आ श्वसुरकुलक ओहि प्रत्येक व्यक्तिक प्रति अनुगृहीत छी, जनिक स्नेह आ शुभकामना हमर डेग बढ़बैत रहैत अछि। साहित्यिक संसारक मित्रगणक शुभाशंसा सेहो पाथेयक काज करैत छैक, से हमरा प्रचुर भेटैत रहल अछि। घर-परिवार, धिया-पुता सभक सहयोग त' रहिते छैक, ओ सभ अधिकार बूझि लैत रहैत छी।युवा प्रकाशक उज्ज्वल जी अपन सज्जनता ओ कर्मठताक कारण प्रशंसाक पात्र छथि। व्यावसायिकताक वक्रगामितासँ बाँचल सोझ बाट पर चलैत रहथु, धन्यवादक संग ई अपेक्षा त' रहबे करत।

एहि पोथी मे माण्डवीक अतिरिक्त आठ गोट आओर दीर्घकविता अछि। आधुनिकताक दिशि डेग बढ़बैत विश्वकविताक एहि कालमे हम जँ त्रेता किंवा द्वापरक पात्र पर किछु लिखबाक यत्न कएल अछि, हुनक संवेदनाक सामञ्जस्य आजुक समयसँ बैसाओल अछि, त' हमर उद्देश्य अछि ओहि चरित्र सभकेँ लगीचसँ देखबाक, हुनक शक्ति आ मर्यादाकेँ बिनु पूर्वाग्रह चिन्हबाक आ ओहिसँ पाठककेँ परिचित करैबाक।हमर ई उद्यम कतेक सफल वा असफल रहल, एहि बोध लेल विज्ञ जनक दृष्टि निक्षेपक अपेक्षा त' अवश्ये रहत।

– आभा झा

11.2.2026

भरत-प्रिया बनाम सीतानुजाक अन्तर्द्वन्द्व

बुद्धि, चरित्र, आत्मसंयम संग शिक्षा ज्योति प्रसार
सदति नियंत्रण वाणी पर आ प्रचुर वीरता धार
तृणभरि जँ उपकृत किनकहुसँ मानथि ओ आभार
यथाशक्ति दय दान पात्रकेँ करथि मूल्य विस्तार ।

एहने गुणसँ भूषित लोकक सुजन करै सम्मान
युग युगादि सज्जनक होइ अछि नि:संशय गुणगान
जे क्यो पढ़य सुनय किछु अनुपम तजै शीघ्र अभिमान
नहि बेशी, थोड़बो गुण पयबा हेतु बनय गतिमान ।

दन्तकथा, इतिहास, शास्त्र वा पढ़बै जँ साहित्य
सत्य शील पूजित सभतरि आ गर्हित अछि राहित्य
लक्ष्य मात्र एतबहि पढ़ि गुनि सुनि निज विवेक आधार
गढ़थि चरित्र, करथि समयक अनुरूप गुणक व्यवहार ।

एहने अछि उपजीव्य काव्य रामायण नामे ख्यात
आदिकविक मुखसँ नि:सृत ई पुण्यक फल थिक स्यात्
रामकथा नहि भोगकथा ई त्यागक थिक प्रतिमान
नहि रामे टा एक एक जन रत तपमे अविराम ।

व्यष्टि सुखक आहुति समष्टि हित रामायण केर सार
'हित प्रजाक सर्वोपरि' मन्त्रक नृपकुलमे व्यवहार
नहि सोचल निज स्तुति- निन्दा केर गप सम्मुख कर्त्तव्य
अति कठोर निर्णयक बेर, नहि सुख- समृद्धि स्मर्तव्य ।

यदपि छलै एहि ग्रन्थक उद्गम अतिशय करुण विलाप
कविक हृदयमे क्रन्दन-क्रौंची सुनि उपजल सन्ताप
पीर असह्य शाप बनि सहसा बनल काव्य आधार
झहरि झहरि कवि नयनक जल लेलक शब्दक आकार ।

मोसि बनल करुणाजल कलमक, कागद कलुष कुठार
जड़ विचार, संकुचित सोचकेँ कएलनि स्यात् उघाड़
स्त्री पुरुषक नहि छल विमर्श ओ नहिए धनिक गरीब
शल्यक्रिया तखनुक चिंतन केर जे न छलै अति दीब ।

कवि नहि न्यायाधीश कि देतै दण्ड विधिक अनुसार
कल्पनाक कूँचीसँ गढ़ि गढ़ि रचय रुचिर संसार
रामराज्य छल राजतंत्र केर कुशल प्रशासन मन्त्र
किन्तु रूढ़ि केर बीझ छलै जर्जरित जाहिसँ तन्त्र ।

नीक बहुत किछु छल त्रेतामे, वर्णन तकर उदार
छलै किन्तु किछु बिन्दु जतय आवश्यक उचित विचार
सकल विषय कवि एन मेन लिखि रखलनि पाठक माँझ
पढ़ू गुनू निज मति अनुरूपेँ अहाँ भोर वा साँझ ।

परवर्ती कवि रामकथा पर लिखलनि बहुत प्रकार
अपन कल्पनासँ गढ़लनि ओ रुचिर नवल संसार
अछि अनेक रामायण बादक आदृत अछि प्रत्येक
विषय प्रवर्तन भिन्न मुदा छथि वर्णनीय बस एक ।

रामायण अछि सिन्धु जतयसँ लेल हमहुँ किछु भाव
क्षुद्र बुद्धि करुआरि बलेँ बहि चलल कलम केर नाव
कोनहु प्राणी एहि जीवनमे होइछ नहि गुणहीन
किछु विशिष्ट, किछु मौन अपन कर्त्तव्य मात्रमे लीन ।

जनक- कुशध्वज भाइ दुहू मिथिलाभूमिक छथि रत्न
तपी नृपति अग्रज तेँ पओलनि मानो अधिक अयत्न
सांकस्यक नृप छला कुशध्वज त्याग- शील गुणखान
चंद्रभाग पत्नी छलि गुणगरि, छलनि पूर्ण सम्मान ।1

पहिल पुष्प आयल छल शीघ्रे गार्हस्थ्यक उद्यान
लक्ष्मी सन सुन्दरि दुहिताकेँ पाबि भेलनि अभिमान
बालसुलभ क्रीड़ा लखि माता-पिता हर्षमे डूमथि
निश्छल हास, रुदन अनचोके सुनि अवर्ण्य सुख पाबथि ।

पीठहि अयलथि दोसर दुहिता नाम छलनि श्रुतकीर्ति
देखि सुताद्वय मातु-पिताकेँ आनन्दक अनुभूति ।
ओम्हर जनक-गृहमे दुइ कन्या एम्हर कुशध्वज गेह
अम्ब-पितृव्या, अरिजन परिजन बिलहि रहल छल नेह ।

दुहू भाइ कएलनि विचार सभ शिशुक संग पोषण हो
शस्त्र-शास्त्र-शिक्षण सद्गुरुसँ, मूल्य गुणक वर्धन हो ।
मिथिभूमिक सौभाग्य चारि कन्या, लक्ष्मी सन सुन्दरि
जननि-जनक, गुरुजनक निदेशेँ बनि रहली छलि गुणगरि ।

छलै एहन संयोग कि माण्डवि सीता छली गभीरा
तेँ सहजहिँ दुइ संग रहै छलि, प्रथित जगत् मे धीरा
उर्मिला-श्रुतकीर्ति चंचला, थिर न रहै छलि कखनो
खनहि एतय क्षणमे ओ कत्तहु, पानि भरै छल पवनो ।

बीति रहल छल सुखद बाल्य, चुपचाप युवापन आयल
भेलै एहन संयोग कि सबहक सिउथ संगे सिनुरायल ।
मिथिभूमिक बहुमूल्य रत्न सभ अवधक बनल शृंगार
रहब संग सभ बहिन सदा एहि भावक सुखद पसार ।

किन्तु मनुज सोचै जे किछुओ, की ओ पूरा भेल
नियति लिखै छै अद्भुत लेखा, चिंतनसँ नहि मेल
कुटिल कालगति पैसि अवधमे सभ किछु बनल बिगाड़ल
सभ बहिनक सौभाग्य सूर्य पर असमय मेघ घेरायल ।

मात्रिक गेलथि आर्यपुत्र तेँ आइ न किछु व्यापृति अछि
ढेउरब- रंगब आइ थिर भय हम, खींचल जे आकृति अछि
मुदा उचाट अकारण मन अछि बैसि गेलहुँ चुपचाप
क्यो नहि स्पष्ट सूनि सकलै अछि, भावी केर पदचाप ।

उपवनमे तरुतल बैसलि माण्डवीक मन उद्भ्रांत
झटसँ आबि उर्मिला पुछलनि सुमिरै छी की कान्त?
स्वल्पे दिनमे नेह गढ़ायल, प्रिय केर विरह असह्य
सत्ते प्रेमक परिभाषा की, विज्ञो जनक अगम्य ।

हँसि बजलथि माण्डवी न बजलहुँ अनुजे किछु अहँ मिथ्या
बहुत गहिरगर प्रेम-भाव आ ओकर रंग छै पकिया
मन्त्र पवित्र परिणयक पढ़ि जे अवध-कुँवर 'कर' गहलनि
दिव्य सुदर्शन सूर्यवंश- अवतंस सभक हिय हरलनि ।

किन्तु एखन नहि भरत- विरहमे हमर हृदय अछि व्याकुल
भय अज्ञात न जानि कोन मन-प्राण कएल अछि आकुल
रहि रहि दहिन अंग फड़कै अछि, नैराश्यक अछि छाया
निरुत्साह मन, शिथिल अंग पसरल अवसादक माया?

दुर्घट छै किछु भाव्य, अंदेशा मनमे अछि अति विचलन
एतय सकल परिजन सकुशल, की केकयमे किछु विघटन ?
एहन खबरि हम दै छी दीदी! चिन्ता भागत छनमे
जलधि ज्वार मोदक पसरल अछि अवधपुरी जन-जनमे ।

पोर पोर उल्लसित उर्मिलक बोल कएल ऊर्जस्वित
रघुवर-अभिषेकक गाथा सुनि के न हयत अति पुलकित!
दूर करू भय-आशंका, अछि एखन सुमंगल वेला
ज्येष्ठ मातुकेँ सूचित कय नृप विश्रामक हित गेला ।

चलू अहूँ तत्क्षण माता लग, गेबै आइ बधैया
ओरिआओन अनेक करक छै अओथिन दैया मैया
थिर कय चित्त माण्डवी चललथि जेठकी मायक कक्ष
पुत्रवधू झुकि शीश नमौलनि सासु लगौलनि वक्ष ।

ओतय छलै सभ किन्तु, न रानी कैकेयिक छनि चालि
सगर भवन पसरल खुशखबरी, बजै मृदंगा झालि
की अनभिज्ञ मातु छथि, एहिठॉं कियै न ओ पहुँचल छथि
वा कि राघवक स्वागतमे ओ अपन भवन बिलमल छथि ।

द्रुतगति बढ़लि माण्डवी, दासी खास धृष्टता कएलक
रानीमाँ छथि कतय, प्रश्न सुनितहुँ बलसँ अनठेलक
केकयसँ अछि संग सासु केर, मुहलग्गू ततबे अछि
मुदा अशिष्ट आचरण खुलि क’ प्रथम आइ कएलक अछि ।

एतेक छोट गप मनमे राखथि एहन प्रकृति हुनकर नहि
केहरि संग मूषक केर समता क्यो सम्मत सुनलक अहि
ध्यान हटाय बढ़लि वेगेँ पुनि अम्ब संगे घुरि आयब
कौशल्या भवनक छवि अनुपम पुनः कतय हम पायब?

मुदा विधाता लिखि बैसल छथि एहन असह आघात
हर्ष- उदधिमे डूमल जे सभ, नहि किनको छल ज्ञात
भाग्य कहू वा शनिक वक्र गति, अवधक खुशी सेरायल
उदित सूर्य दीपित प्रकाशसँ, क्षणमे मेघ घेरायल ।

जखने सुनलनि अम्ब कोपभवनक भीतर छथि बैसल
एहन भेलै की हाय दैव! आदंक हृदयमे पैसल
तखनहिँ हतोप्रास भूपतिकेँ देखलनि कक्ष प्रवेश
विघ्न बहुत बड़का सम्मुख, नहि संशय बाँचल लेश ।

की पुछबै, ककरा पुछबै हम बात मुदा बुझबै कोना हम
श्वसुर-सासु कक्षक आगाँ धरि ठाढ़ि अशिष्ट कोना रहबै हम
हर्ष सगर प्रासाद प्रसृत छल माण्डवीक मन दुविधा
पुण्यकालमे अभिषेकक नहि देखा रहल छल सुविधा ।

युवा राम रघुकुल सुनाम अभिषेक हेतु जनता अधीर
सदति संग पुरथिन तन-मनसँ निश्चय भ्राता तीनू सुवीर
गुरु वशिष्ठ केर कुशल मन्त्रणा, रामक निजक विवेक
अवधक भाग जगल छै, सभ संयोग एक पर एक ।

मुदा बुझाइत छै कि एलै अछि संकट बहुते भारी
शुक्लपक्ष जनु पसरि गेल हो गहन अन्हरिया कारी ।
पिंजरबद्ध विहग सम भरतप्रिया कक्षमे बूलथि
घटलै किछु अनिष्ट असंशय, स्पष्ट मुदा नहि बूझथि ।

जरल पएर बिलाड़िक सम माण्डवीक हाल बेहाल
सम पर छल संगीत कियै विधि कएल ताल बेताल
आह सकारण भिनसरसँ छल विकल चित्त नहि हेतु बुझल
दारुण विपद् कोनो भावी पदचाप तकर किंचित् न सुनल ।

असमय गुरुक बजाहटि सुनि, भय उपजल मनमे अतिशय
अति विषण्ण हारल गुरुमुख लखि भेलनि अनिष्टक निश्चय
ककरा की पुछियै गुनधुनमे छली कुशध्वज- दुहिता
कुलिशोपम गप बाहर आयल, टारि सकल के भविता?

आह खसलि ओ आसमानसँ, दुर्मति केहन घेरायल
अम्ब कियै तजि प्रकृति मृदुल, गप बजलथि विष लेपटायल
कतेक प्रेम छल ज्येष्ठ कुँवरसँ, आइ एहन कियै कएलनि ?
राम-भरतमे एतेक भेद! हा! अधम सोच केना अयलनि ?

सत्य कहै छै लोक कि मन केर भाव न क्यो कहि पाओत
कखन देवता असुर कखन जिह्वा पर आबि नचाओत
हमर मनस्विनि सासु, जनिक गुण-गणक छलहुँ हम कायल
हाय! विनाशक प्रहर!वचन- शरसँ पुर कएलनि घायल!

विधिक खेल, प्रतिकूल समय सद्बुद्धि न दै छै साथ
सुखक सेज सोझाँ रहने की, सूतब भाग्यक हाथ
स्वप्न- भवन दुर्बुद्धि बिहाड़िक सहि न सकल आघात
सभक मनोरथ ठामहि भांगल भग्न हृदय ओ गात ।

हतभागिनि हम कोना क' जेबै बहिन वा कि माता सम्मुख
राज्य अनधिकृत भेटनि भरतकेँ, राम करथि कानन अभिमुख
सासु उझिललनि अवधक सुख पर स्वार्थक आइ इन्होर
हाय ! अन्ध सुतमोहपाशमे प्राप्य अयश घनघोर!

लोक कहैये पुत्र कुपुत्रक श्रेणीमे बरु आबय
मुदा कुमाता स्त्री न कदाचित् नहि अवाच्य ओ भाखय
एतय किन्तु प्रतिकूल बिहाड़िक धूरा धक्कड़ पसरल
ककर थिकै दिन, मार्जन करतै, सीतै आंचर मसकल !

सुनने छलहुँ माइ बिनु कहने सुतक मनस्तल बूझथि
सुख-समृद्धि संततिक जाहिसँ, सत्वर डेग बढ़ाबथि
हन्त! किन्तु ओ पुत्रमोहमे अनय मार्ग पर चललथि
पतिक स्नेहसँ, पुरक मानसँ, स्त्रीक धर्मसँ खसलथि ।

हमरा नहि प्रत्यय कनियों अछि भरत लेता ई राज
गुणागार अग्रजक भाग लय स्वयं पहिरता ताज
लोभक पाँक फँसलि माता हा! कएलनि एहन अकाज
खसल हठाते वज्र अवध पर, किन्तु न कनियों लाज ।

सुनल निदारुण खबरि, कि पुरजन छथि हतबुद्धि अवाके
भुविक कम्प वा मचल प्रलय अछि, छनमे भेल छनाके
कोना नुकाबी अपनाकेँ हम, मुँह न रहल किछु बाजी
संशय लोक अबस्से करता भरत-माण्डवी राजी ।

हम्मर प्रियतम बहिन, जनिक हम स्नेहसुधासँ स्नात
हुनकहि कष्टक हेतु बनलि हम एहन विपर्यय घात
एक व्यक्ति एहि सकल अनर्थक मूल, न विधिक विधान
नरपति भेल विवश वचनक वश, घुरय न तरकस बाण ।

व्यथित चित्त माण्डवी भवन निज बैसल छथि एकाकी
वनक हेतु सन्नद्ध राम छथि आब बचल की बाकी
बाँचल अछि औखन किछु अघटन, लखन क्रोधमे टहलथि
बहुत धैर्यसँ रघुवर हुनका शास्त्र-नीति कहि बुझबथि ।

राम मुदा जनरंजनकर्मा, वन-प्रासाद समान
प्रण पिताक माताक तोषमे निज कष्टक नहि भान
सुख-दु:ख, लाभ- हानि, यश-अपयश जनिक हेतु अछि एक
रघुकुलतिलक जनक-वचनक नहि कोनाक' रखता टेक ।

जे प्रिय सभक, प्रजा सुखदाता गृह तजबा हित बाध्य
रिपुक आक्रमण सहब सरल थिक, स्वजनक घात असाध्य
अरिक आक्रमण तन पर होइछ, उर पर स्वजनक चोट
तनक घाव उपचार योग्य, नहि अंतर्मन विस्फोट ।

चलला रघुवर विपिन वास हित श्री सँ रिक्त अयोध्या
कोमल गात वसन वल्कल, नहि कान्ति मुदा अछि रोध्या
संग चलक निश्चय कए दीदी, ठाढ़ि भेलि अविलम्ब
सुख-साधन अछि व्यर्थ, राम छथि एकमात्र अवलम्ब ।

शेष अंश लक्ष्मण जँ बुझलनि राम विपिन जयबे करता
अनुनय- विनय कयल आतुर भए, संग ओहो धरबे करता
बनल अयोध्या मरघट तखनहि धएलनि वल्कल राम
श्री सीता आ शौर्य लखन संग, आकुल अवधक धाम ।

चरणस्पर्श कए बिदा करब नहि संभव हमर अभाग
पुत्रवधू रानी कैकेयिक, बिनु अपराधक दाग
एहि कलंकसँ मुक्त होयब नहि एहि जीवनमे शक्य
हाय निष्करुण दैव! मृत्यु नहि होयत हमरा लभ्य!

नहि समुचित, दु:खसँ अधीर भए मृत्यु कामना घोर
रणसँ क्वचित् पलायन वा थिक दैन्य असह्य अथोर
बनि पाषाण एखन भरतक स्थिति देखि करब व्यवहार
दु:ख, अपयश, ग्लानिक विष-शरसँ हयत कोना निस्तार ।

दुश्चिन्तामे पड़लि माण्डवी सुनलनि हाहाकार
राम-विरहसँ दु:खी भवनमे मृत्युक छल पैसार
हाय विधाता निष्ठुर कत्ते, दु:खक आदि नहि अन्त
एक छिद्र यश-पटमे भेने अनरथ करै अनन्त ।

सासु सकल हतबुद्धि कि पति चढ़ि चुकला मृत्युक यान
के ककरा ढाढ़स दै, तीनू शब्दहीन पाषाण
मांडवी, श्रुतकीर्ति, उर्मिला निज दु:ख मनमे दाबि
बैसि गेलथि नृप-शवक लगीचे, सासु पार्श्वमे आबि ।

राजत्वक अजबे सन गरिमा, नहि खुलि हँसी न कानी
दु:ख असह्य हो तदपि, न धीरज त्याज्य ध्यान ई राखी
पतिक शवक सोझाँ रानी सभ व्यथित मुदा निर्वाक
सूर्यवंश यशभाग बहुत, बनि दीन न कटबी नाक ।

गुरु वशिष्ठ करणीय करै मे व्यस्त पठौलनि दूत
केकयसँ पहुँचथि राजा केर यथाशीघ्र दुइ पूत
भाग्यहीन नृप शेष, कर्म अंतिम शास्त्रक अनुसार
अऔता भरत शत्रुघ्न होयत तखने अग्निक संस्कार!

नृपक मृत्यु, रामक निर्वासन! भीषणतम ई काल
प्रजाक मनमे बढ़ि रहलै अछि असंतोष केर ज्वाल
एहन समयमे भरत आबि क' स्थिति अनुकूल बनौता
गुरुक भावना केर अनुरूपेँ जटिल जाल सोझरौता ।

चिन्तन गुरुक न अनुचित किंचित्, हित अवधक छनि ध्यान
मुदा भरत-प्रकृतिक परिचयवश, देखी नहि कल्याण
घटित सकल घटनाक हेतु गमि भरत आब की करता
तामस वा लाजक वश नहिए अनयमार्ग पग धरता!

भाग्यक गति किछु छै विचित्र, नहि तकर तर्कसँ मेल
बुद्धि कुबुद्धि बनै छै छनमे जनु विवेक हरि लेल ।
कथुक कमी नहि छलनि जननिकेँ कियै एहन हठ धेलथि
हेतु बनलि ओ पतिक मृत्यु केर जे अशेष सुख देलथि ।

जनिक इन्द्र सम भर्ता तिनका हेतु अप्राप्य छलै की
रघुवर सन सुत जकर, मनोरथ-पूर्ति असाध्य छलै की
एक बेर कहितथिन फोलि मुख, राघव सम्मुख माय
हर्षित मन ओ दितथि राज्य लग मातु चरणमे जाय ।

चिन्हि न सकलि ओ अपन पुत्रकेँ निर्लोभी प्रत्येक
प्रेम, त्याग, शीलक गुण गूथल सकल एक पर एक
ज्येष्ठ जनक इच्छा आज्ञा बुझि माथ झुकबितथि राम
कष्ट विपिन केर कठिन व्यर्थ दय मातु घिनओलनि नाम ।

चारि पुत्र विद्या-पौरुष-बल-शील-स्नेह- संयुक्त
भेल मतिभ्रम सभ छिरिआयल, पतिसँ भेली वियुक्त
आशंका दु:ख-राति अवध केर अछि सुदीर्घ आ कारी
भरतक जानि अबैया हिय पर शिला पड़ल अछि भारी ।

पितृशोक, माता-अपवादक खबरि कोना सुनता मम प्राण
अवधभूमि पर पएर रखैते ग्लानि-भारसँ जेतनि जान
श्वसुरक मृत्यु, राम-वनवासक दु:ख अछि भेल एकात
पतिक कष्टसँ काँपि रहल अछि भालरि सम मम गात ।

आह! जन्मदा संग भरत केर सहज हेतनि केहि बिधि आलाप
रानीमाँक कोर माथ धय शमित हेतनि की उर-सन्ताप ।
सभ किछु छिन्न-भिन्न भेल हा!मति नहि कनियों शान्त
एम्हर इनार, ओम्हर अछि गड्ढा, मनस् क्लान्त ओ श्रान्त ।

कम्पित हिय छनि भरतप्रिया केर, आबहु की दु:ख शेष
जानि न भरतक हाल हेतनि की देखि पिता नि:शेष
ओ करता की नृप विहीन अवधक रक्षक बनि पऔता
अथवा बाट वनक धय ओहो तापस वेश बनौता!

असगुण छल की, केना हठाते रथ केर चक्का टूटल
बूझि पड़नि पूर्वज संग दशरथ-मूर्ति सेहो अछि टांगल
भ्रममे छथि ओ छल यथार्थ वा मन पर छारल माया
स्यात् भरत-मन पसरल चहुँदिशि अवसादक अछि छाया ।

किन्तु भरत-मन अवध-दूत लखि भेल बहुत उद्विग्न
दूतक मौन सेहो सङ्केतक किछु त' अबस्से विघ्न
अनुज शत्रुघ्नक स्थिति न भिन्न, ओ गुनधुनमे छथि लागल
रथ सम दुहू भाय केर चित्त छल अवध हेतु अगुतायल ।

स्वप्न छलै अथवा माया, छल मन्दिर किंवा मतिभ्रम
सभ पूर्वज संग मूर्ति दशरथक छल संभव की ओहि क्रम
आशय की, नहि बूझि व्यग्र पुनि दूतक केलनि जिगेसा
जा धरि अवध पहुँचला ताधरि चिन्ता रहल अशेषा ।

पूछथि कतबो किन्तु न आज्ञा बिनु मुँह फोलि सकै अछि
अनुचर जे विश्वस्त न गोपन गप ओ बाजि सकै अछि
दु:ख दारुण कतबो हो, नहि ओ मुखसँ आह कहै अछि
भाव उरक सभ दाबि मात्र आदिष्ट कथा बाजै अछि ।

बुझलनि हाल पहुँचि जखने सभ भेलथि ओ निर्वाक
हाय!भूमि पर पड़ल शान्त के, आइ अवध केर नाक
आंशिक सत्य किन्तु बूझल छनि, नहि ओतबहु छनि सह्य
सम्मुख अयबा लेल तत्पर छनि अपयश- हेतु असह्य ।

बूझल छै नश्वर देह सभक, जीवन- मृत्युक चलि रहल चक्र
नहि किन्तु सह्य होइछ पीड़ा, यमराजक जहिखन दृष्टि वक्र
सभ ज्ञान, विवेक हेरा जाइछ, प्रियजनक मृत्यु विकराल देखि
किछु ज्ञानवृद्ध जन मात्र धैर्य धयने बजैत छथि स्थिति परेखि ।

नहि वशमे ककरो छै परन्तु शाश्वत सत्यक विपरीत गमन
बजलथि विह्वल ओ साश्रुनयन, हे पूज्य! समर्पित विनत नमन
छल एतेक शीघ्रता जयबा केर, दिविमे छल कोनो काज बचल
हम आ शत्रुघ्न अबितहुँ शीघ्रहि, एतबहुप्रतीक्षा अहाँ कयल!

एलथि माता लगमे तखनहिँ, कहलनि धीरज हे पुत्र, धरू
नृप केर अंतिम शास्त्रोक्त कर्म होमय अविलम्ब, न देर करू
दारुण अशौचसँ निवृत्त होइ, अवधक शासन प्रति ध्यान धरू
हे पुत्र! कान्ह पर भार बहुत जनताक सकल अहाँ त्रास हरू।

नहि मर्म बूझि सकला बातक, तकलनि चारू दिशि भरत हन्त!
मृत्युक दुस्सह पीड़ाक संग किछु छलै सघनतर भय दुरन्त!
हे जननि! कियै ई कहि रहलहुँ, छथि कतय ज्येष्ठ भ्राता रघुवर
शासन-तन्त्रक सभ भार जनिक, अग्रजक हेतु की अछि दुष्कर !

माता न बूझि सकली औखन, छथि पुत्र संयमी निर्लोभी
कहलनि पोल्हाय हे पुत्र! राज्य अछि अहँक, न क्यो मार्गक रोधी
जनताक मोन विद्रोह-भाव आबय नहि अवसर हम छोड़लहुँ
दोसर वर रूपेँ नृपसँ हम, काननक वास रामक मँगलहुँ।

चिहुँकि भरत उठलथि हठात् पड़ि गेल आगि पर जेना चरण
ई केहन अनर्थ कयल माता, वर अछि कि सुतक सुख-शान्ति-हरण!
छी केहन कि राज्यक लिप्सामे नहि मनोभाव पुत्रक बूझल
अग्रजक संग सुख चरम जकर हुनकहि वियोग प्रारब्ध लिखल।

ई दैवक नहि अछि निठुर डांग, हमरहि पापक परिणाम घोर
विधि पातक एहन न लिखि सकैछ, दुर्बुद्धि देखाइछ पोर पोर
जन्मक दात्री छी अत: आइ शर हमर अहाँ प्रति नहि उठैछ
रहइत क्यो अन्य त' प्राण ओकर देहक भीतर नहि रहि सकैछ!

ई कृत्य एहन जे स्त्री-जातिक विश्वासक हन्ता बनल आइ
महनीय मातृपद उपर कलंकक पोतलक करिखा हे माइ! आइ
नहि किन्तु तरकसक तीर, घूरि पुनि आबि सकै अछि ककरो लग
अहाँ लेल वचन, सुनि लिय' मुदा पुत्रक अधिकार न बाँचत संग।

पति भेला दिवङ्गत, अयश-भार दय पुत्र केलहुँ निष्प्राण अहाँ
चलू एक संग भर्ता- पुत्रक जल संग केलहुँ तिलदान अहाँ
कहि श्रान्त भरत धय माथ हाथ, हततेज भूमि पर बैसि गेलथि
स्थिति देखि माय बड़की तत्क्षण कन्हा पर भरतक हाथ देलथि।

गुरुवरक अनुज्ञा पाबि सकल अंतिम संस्कार नृपक कयलनि
नहि तदनु शब्द बजलथि एकहु नहि नयनक अश्रुबिन्दु बहलनि
छल प्रजा स्तब्ध, गुरुवर गभीर, सभ माइ, सकल परिजन विषण्ण
कए काज यन्त्रवत् खिन्न भरत श्रीहीन जेना केओ हो विपन्न।

पीड़ाक प्रकृति होइछ विचित्र, नहि बुद्धि विवेकक ओतय जोर
शाश्वत छै जीवन-मृत्यु चक्र, नहि दु:खक तदपि छै ओर छोर
जँ दु:खक विषय सोची सदिखन, नहि अन्त ओकर कतबहु कनने
निकसैछ मनुज वेदना-पाश, पुनि कर्म-प्रवृत्तिक हाथ धेने।

ग्लानिक पहाड़ तर दबल भरत वन जयबा केर निश्चय कयलनि
घुरि चलू अवध करू क्षमा अहाँ कहि रामक चरण भरत धयलनि
यद्यपि भरतक प्रति स्नेह अधिक, घुरि चलब न रामक वशमे छल,
किन्नहु न अवज्ञा नृप वचनक ई रीति रघुकुलक अविचल छल।

परबोधि बहुत निज अनुज राम, देलनि सधैर्य उपदेश नीति
अवधक कल्याण प्रथम बूझू नहि करू अपयशक तनिक भीति
राज्यक न सुरक्षा राजा बिनु, कर्त्तव्य बूझि प्रिय अनुज घुरू
जनताक चतुर्दिक सुखक हेतु तन-मन-धन अर्पण अहाँ करू।

सुखमय बाल्यक निर्द्वंद्व समय भेटत न अनुज, बूझू कहियो
दायित्व निमाहक बेर कीर्ति-अपकीर्तिक चिन्ता नहि कनियों
बिधनाक लिखल पटकथा सकल मानव अभिनय हित बाध्य सदा
हम अहाँ, पिता-माता न हेतु, गुड्डीक डोरि नहि हाथ मुदा।

राजाक राजपुत्रक जीवन, नहि मात्र स्वयं केर होइत छै
सर्वोपरि जनता-हित-चिन्ता, दु:ख निजक दाबि ओ करइत छै
बिलमू न भरत, अहाँ घुरू शीघ्र, नरपतिक बिना नहि राज्य चलै
नहि सुखक सेज छै राज्य कांट-कूसक पथ भूपति सदति चलै।

अपराध-बोध अछि केहन भरत, हम चारू छी की पृथक् कहू
कर्त्तव्य प्रमुख, नहि भ्रान्ति कतहु, रविवंशक ई थिक नियम गुनू
नहि व्यष्टि, समष्टिक हितवेदी समिधा अहाँ दैत रहू सदिखन
हम एतय वचन रक्षाक हेतु तप-नियम करैत रहब अनुखन।

गंभीर गिरा रामक सुनलनि पुरजन-परिजन संग घुरि अयलथि
तप एक करथि वन माँझ राम, रामानुज दोसर तप कयलथि।
ओ नन्दिग्राममे तपी बनल दिन राति प्रजाहित निरत रहथि
नहि अवधपुरी प्रासाद सुखक किंचित् अभिलाषा भरत करथि।

किछु छलै किन्तु अतिशय विरूप हा! स्त्रीगण विषयक ध्यान ककर
उर्मिला माण्डवी परिणीता छथि कोना कतय चिन्ता न तकर
उर्मिलाक मनमे तदपि तोष, सेवा-रत पति छथि यत्किञ्चित्
नहि दूर भरत बहु दूर किन्तु, माण्डवी दरश- सेवा वंचित।

मातृक जयबासँ पूर्व निशा, ओ छल अंतिम पति-संग- काल
घटि गेल व्यतिक्रम ततेक बीच, भाग्यक अजबे छल रंग ताल
आबथि नहि कौखन भरत भवन, पत्नी न ओतय जा सकै छलथि
निर्वाक मांडवी निशा-दिवस अपयश मार्जन दिशि ध्यान धरथि।

अपराध ककर, ई निठुर दण्ड सभ भोगि रहल छल अवध धाम
दु:ख सभक छलै गुरुतर कि सीबि मुख भोगि रहल छल अपन ठाम
निष्कम्प शिखा दीपक समान माण्डवी जरै छलि दिवा- निशा
श्रुतकीर्ति सोदरा यत्नो कय नहि बाँटि सकथि घनघोर व्यथा।

नहि छल साहस ओ स्वयं जाइ, माता कौशल्या चरण छुबथि
नहि शक्ति वधू ओ पुत्र आनि बड़की मायक ओ पीर हरथि
आ मातु सुमित्रा! अहा धरा पर होइत छै एहनो नारी
हँसि पुत्र पठौलनि काननमे, छल त्याग- तपस्या बड़ भारी।

केहि भाँति मिलाबथि नयन कि हुनकहि सासु सभक कष्टक कारण
भेल छिन्न-भिन्न सम्बन्ध, सिनेहक लोप, कि केहि विधि हो वारण
नहि देखि सकै छथि उर्मिल दिशि, हा! विरहिणीक दु:ख दारुण हे
ई वयस नब, छथि कन्त दूर, थिर बाहरसँ मन आकुल हे!

तेँ सदति रहै छलि कोन धेने, बस माइ कैकेयी सेवामे
छल काज बहुत कारुणिक कि ओ पाषाण बनलि पछतावामे
निर्मम गति कालक केहन कि ओ लोभक समुद्रमे बहि गेलथि
छनमे छनाक, पति- पुत्रक संग यश-विमल समस्त हेरा देलथि।

ओ स्खलन एक, त्रुटि वज्र बनल, नेने आयल परिणाम असह
अनुताप ताप दिन राति जरथि, देखथि कलंक-ज्वाला लह लह
बनि जाइ बुद्धि दुर्बुद्धि जखन झट मोह निशा अन्हराबै छै।
अंधड़ अनिष्टमे शुष्क पात सम एम्हर ओम्हर उड़ियाबै छै।

अवसादक एहि विकट काल, सभ अपन अपन दु:ख झाँपै छल
उर्मिला सदा जेठकी मायक सेवामे समय बिताबै छल
श्रुतकीर्ति खनहि सासुक सेवा, खन पति- खगता केर ध्यान धरथि
एकान्त हमर नहि स्थायी हो तेँ आबि राज्य केर हाल कहथि।

मन-वचन-कर्म समरूप होयब छै भद्रजनक लक्षण विशेष
सभसँ परिपूरित कौशल्या, हियमे राखथि धीरज अशेष
ओ बुझै छलथि मनपीर भरत जननी सहि रहली छथि अथोर
प्रवचनक ब्याज प्रतिदिन हुनका बजबै छलीह अति लगा जोर।

बिनु काज बहन्ना बना माण्डवीकेँ लगमे ओ बजबै छलि
कम हो कनियों दुःख तेँ जननी किछु नीतिक गपशप सुनबै छलि
माताक नेने अधिकार भरतकेँ कहने छलि अधलाह काज
कए रहल वत्स छी अहाँ, त्यागि भार्या नहि समुचित अवध राज।

कातर भए बजला भरत मातु किछु श्राप अवधकेँ लागल छै
सामान्य न केओ छै एतय, मात्र अपमान, ग्लानि, दुःख जागल छै
ई तपक काल छै हे माता, हम एतय अहाँ सभ भवन-माँझ
भैया भौजी आ अनुज लखन लागल छथि तपमे भोर-साँझ।

अहाँ माइ बुझू त' मनक बात, हम कोना भवनमे चरण धरी
अहीं कहू उर्मिला सम्मुख हम धैर्यक संयम केर वचन कही
हे जननि न कनियों बिसरल छी माण्डवीक प्रति दायित्व बोध
नहि मुदा समय निज सुखक, न हो एहि राज-काजमे तनिक रोध।

अओता भैया कए पूर्ण वचन, राजा बनि करता मुक्त जखन
रामक, लखनक दाम्पत्य सहज, हमरो हिय बहतै प्रेम तखन
ता धरि चाहब हम क्षमा अम्ब! सभ भार अहीं केर चरण धरब
हम पूत कपूत अवश्य मुदा हे जननि न किंचित् रोष करब।

घुरि गेलथि माय, सुनि तपोदीप्त कृशकाय भरत केर अटल वचन
कहितथि की जाइ भवन अम्बा, वाणी भेलनि अत्यन्त कृपण
माण्डवीक मोन नहि छल लिलसा, ओ पतिक संगमे सुख भोगथि
हँ छलनि मोन तप-रत भरतक निज साध्य भाग बनि दुःख बाँटथि।

नहि किन्तु मनोरथ सकल पूर्ण होइत छै मानव केर जगमे
छल काल कराल कठोर शनिक ग्रहदशा अवध केर प्रति मगमे
राजा बनि जाइछ रंक खनहि शीतल छाहरि खन आतपमे
माताक स्नेह-रस-सुधा सेहो बदलैछ गरल केर आकरमे।

ओहि गरलक भाग विशेष शम्भु सम पिउने छलि मिथिला बाला
बिनु दोष जानकी विपिन गेलथि अपकीर्ति व्याल कण्ठक माला
उर्मिला अकारण पति विरहक ज्वालामे जरइत छथि प्रतिपल
माण्डवीक नहि किछु दोष गरल ग्लानिक परन्तु पिबइत अनुपल।

ई छलै भाग्य केर कथा किन्तु मैथिल धीया धीरज अशेष
नहि एक दिवस नहि मास एक चौदह बरखक तप दीप्त तेज
नहि विचलित क्यो, नहि दीन हीन कर्त्तव्य निरत सभ आठ याम
सभ भार भरत, लखनक उठबथि माण्डवी उर्मिला बिना नाम।

पत्नीक शील ओ त्याग बलेँ सम्पूज्य आइ धरि राम बनल
उर्मिला सहनशक्तिक भरोस लखनक कानन दिशि डेग बढ़ल
श्रुतकीर्ति सभक मुख हास हेतु किछु रोज बहन्ना ताकै छलि
माण्डवी भरतसँ दूर मुदा संग हुनक सुतै आ जागै छलि।

माताक हृदय सभ देखि द्रवित, नहि मुदा साध्य हुनकर किछुओ,
आंखिक समक्ष घर भरल-पुरल, विच्छिन्न भेलै सक नहि कनियों
हो समरथ कतबो किन्तु कहू के विधिक लेखकेँ काटि सकल
सुख भवनक गेल बिलाइ अवधसँ बाहर रघुवर-चरण पड़ल।

रातुक दू पहर व्यतीत किन्तु माण्डवी बुलै छथि घड़ी-घड़ी
बजली कौशल्या निकट जाइ हे पुत्रि, कियै नहि शयन करी
हे अम्ब, एखन ओहि कुटिया केर दीपक बरैत छै से देखियौ
व्यापृत छथि आर्यपुत्र एखनहुँ, हम सुतबै कोना क' से कहियौ।

तप-सरिता अछि ई अवध कि हम दुइ विवश ठाढ़ प्रतिकूल कूल
ओ राज्यतंत्र मजगूत करथि, हम हुनक पन्थसँ पृथक् धूल
श्रापित अछि अवध एखन न क्यो, निज भोग विलासक बात करी
बीतत ई काल कठिन निश्चय, ता धीरज संयम मात्र तरी।

अहँ स्वयं प्राणप्रिय पुत्र बिना छी कतेक विकल की बूझल नहि
छी तदपि पहिरने कवच धैर्य, कृतकर्म सपत्नी गूनल नहि
बन्हन परिवारक फूजय नहि, अहाँ दिवा-रात्रि ई ध्यान धरी
छिरिआइ न अन्त:पुर कौखन भेदक नहि जोड़क यत्न करी।

सुख शान्ति पुनः आबय एहिठाँ, सभ भाइ पूर्ववत् सुख भोगथि
ई कथा कलंकक मध्य घटल, नहि स्मरणोमे किञ्चित् आनथि
हम सभ भगिनी पुनि संग एक सामान्य परस्पर बात करी
एहि आश उमेदे हे जननी, निज क्षुधा पिपासा कात धरी।

अहँ एतेक वयसमे एहन कष्ट सहितो नहि विचलित होइत छी
गरिमाक सादगी दृढ़ता केर प्रतिमान रूपमे प्रचलित छी
नहि नृप-मृत्युक अभियोग, न कौखन सुत- निर्वासन देल अहाँ
नहि कयल निरादर मनहु मोन केकयदुहिताक कदापि अहाँ।

आ माइ सुमित्रा आह! जनिक दर्शनसँ नयन जुड़ा जाइछ
सभ कृत्य विदेह पितृव्य जकाँ, कामक आवेग पड़ा जाइछ
अहाँ स्वयं जनै छी त्याग-तपक भूमिक पालल-पोसल हम सभ
दुर्बल न पड़ब आबय झंझा, जड़ि गहिक' धेने रहबै हम सभ।

अनुताप ताप जरइत माता कैकेई अति सीदित छथि
हा, एक क्षणक अन्हर-बिहाड़ि फल भोगि रहल ओ पीड़ित छथि
नहि किन्तु कदाचित् अश्रु नयन केर बाढ़ि तोड़ि क' बहइत छनि
अविचल सभ द्वन्द्व सकल पीड़ा निर्वाक सदा ओ सहइत छथि।

ई केहन घुटन केर वाष्प कहू, सबहक मनमे छै घुमड़ि रहल
ई घनीभूत पीड़िक मेघ, नहि वृष्टि रूपमे बरसि रहल
अहाँ देखि रहल छी सभक हाल, कोन वचन व्रणक लेपन बनतै
गुम चोट जकाँ सभ लोक घरक ई असहनीय वेदन सहतै।

बजिते बजिते ई बोध भेलनि प्राचीमे उष:किरण ऊगल
गपमे बेरा बितलै परन्तु ग्रन्थिक डोरी निश्चय खूगल
हे अम्ब क्षमा, अपलाप हमर, शयनक वेला त' खसकि गेल
नहि जानि नियंत्रण भेल शिथिल, सभ भाव मनोगत निकसि गेल।

हिमखण्ड आइ किछु पिघलि रहल से कौशल्या छलि बूझि रहल
एहि अल्प वयसमे गहन पीर, प्रतिकार मुदा नहि सूझि रहल
तेँ सुनै छली जननी चुप भए, किछु हल्लुक हो कुण्ठाक भार
दु:ख दुस्सह किन्तु, जँ बँटबै त' हयतै ई लम्बा समय पार।

ओ यत्न करथि सदिखन कि माण्डवी अपन पीर कनियोँ बाँटथि
नहि किन्तु सफल भेलथि, कि शब्द नहि एक भरतजाया बाजथि
नहि नोर आंखि, कलपब- कानब, दिन यापथि ओ जनु भेल यन्त्र
निर्वाक जरै छल दीपशिखा, मौनक नेने छथि जेना मन्त्र।

अछि ताप केहन, सन्ताप कठिन, एहि बाला केर अछि दोष कोन
हा हन्त! विधिक की क्रूर व्यंग्य, सभ राजसुता केर भोग कोन
जंगलक कष्ट जेठकीक भाग, दोसर सहि रहलथि विरह ताप
दु:ख माण्डवीक दारुण कतेक, दिन ककर कष्ट केर करत माप।

कत प्रेम पललि निज धीया केर सुनि कष्ट व्यथित मिथिला नरेश
नहि स्वप्नहुमे चिंतन हयतनि राजत्वक सुख भेल सकल शेष
सोन सनक सभ पुत्रवधू, नहि ककरहु सुख हम द' सकलहुँ
नहि उलहन दै छथि समधि किन्तु की क्षमा स्वयंकेँ कए सकलहुँ?

ई राज्य अवध की की भोगत, छथि जतय व्यथित सीदित स्त्रीगण
छी स्वयं बहुत अनुतप्त जानि नहि की देखब हम एहि जीवन
रामक चिन्ता नहि ततेक कि ओ छथि अतुल संयमी तपी वीर
देखब दुष्कर अत्यन्त भरत निर्दोष सहथि ई असह पीर।

सभ बूझि रहल सबहक पीड़ा नहि किन्तु केओ किछु बाजि सकय
अतिशय गहीर घावक पीड़ा, उपचार न केओ जे ताकि सकय
नहि कष्ट प्रजाजनकेँ किंचित्, शस्यक उत्पादन प्रचुर छलै
गुरुकुल कि आश्रमक व्यय समस्त निर्बाध यथाविधि चलै छलै।

सभ वणिक् वृन्द व्यवसाय लग्न तन्त्रक सभ सुविधा पाबै छल
निज उन्नति संग राजस्व प्रचुर ओ राजकोशमे आनै छल।
सभ कर्मकरक छल भाग बँटल, पूर्वजक वृत्तिमे रमल सकल
सभ छल समृद्ध, सभ छल स्वतंत्र कर्त्तव्यनिरत छल सभ अविकल।

जे छलै अवध केर कष्ट कि किछु ग्रहदोष छलै मारुक असह्य
परिजन भूपति केर त्रस्त मात्र, हा!दैवक गति होइछ अगम्य!
दशरथक प्राण केहि दोष गेल, की वचन देब होइछ अनुचित
अथवा विश्वासक तरु निच्चाँ छल-उरग मात्र होइछ अगणित।

एहि मर्त्य भवनमे जीबि रहल गुड्डी सम, डोरी विधिक हाथ
प्रतिकूल समयमे बुद्धि सत्य नहि दैछ कदाचित् नरक साथ
दुर्मति बलात् घैरैछ केना जाइत छै भारी तखन अनय
शर जखन निकसिकेँ तरकससँ श्रवणक प्राणान्तक हेतु बनय।

धीरा वीरा भूपतिक प्रिया बनि गेलथि स्वयं वैधव्य हेतु
जनु घेरि नेने मोहक जाली आमंत्रित करइछ राहु केतु
बलसँ धकलैछ अकृत्यक पथ कहियौ माया भवितव्य कि वा
सभ पुण्य हेरा जाइछ छनमे, अपयशक भाग ओ बनय सदा।

ई माया, छलना ई भारी, सभ मर्त्य एकर चांगुर आबय
ठोकर दुर्भाग्यक पाबि दिवस सुखमयक आश आंगुर गानय
ओ छल अदृष्ट वा माये टा वन भटकब सीता भाग भेटल
ओ राजसुता, ओ राजवधू, दैवक कठोर आघात सहल।

नहि त्याग तपस्या सीता केर, कवि दृष्टि उपेक्षित रहल मुदा
करुणाक मोसिमे डुमा नीब, लिखलनि भावुक आख्यान सदा
रहि गेल थि कोनमे अनुजा सभ, नहि नजरि ओम्हर गेलनि किनकहु
सहलनि सभदिन घनघोर कष्ट, मुखसँ न आह निकसल सरिपहुँ।

किछु श्राप अवश्य छलै जहिखन मिथिला अवधक सम्बन्ध जुड़ल
अथवा भवितव्ये रूप बदलि सभ दुर्घट वार्ता हेतु बनल
सुख जे भेटल ओ बाल्ये धरि, नहि कृत्रिमताक कतौ छांही
अबिते सासुर सभ बहिन हन्त! सहिते रहलहुँ रौदक धाही ।

रघुकुलक कतेक महिमा जगमे, बनि भाग हमहुँ गौरव भागी
बनि यन्त्र मुदा एहिठाँ जिबैत सभ जन लगाय मुँह पर जाबी
सन्तुलन छलै नहि एतय तकर आभास त' अबितहि भेले छल
सम्मान सुमित्रा कौशल्या रनिवासक मध्य त' नहिए भल ।

छलि एकमात्र केकयदुहिता राजाक हृदय पर राज करथि
दुइ आर जननि, अन्त:पुरमे भूपति-प्रीतिक नहि आस करथि
ई भिन्न दुहू मायक धीरज, परिवारक ऐक्यक हेतु बनल
नहि किन्तु भरतजननी कहियो, मर्यादा एहिसँ पूर्व तेजल ।

जा जा धरि बुझितहुँ सभ बहिनी एहि भवनक रीति नीति सम्यक्
ता वचनक वज्र हठाते खसि, खेरहा लिखि बैसल हा अनयक
हम खन डूमी, उतराइ खनहि एसकरि बैसलि चिंतनक नाह
देखैत रहै छी सुनी सेहो बिनु शब्दक स्त्रीजन-हियक आह ।

वन वन भटकब दीदीक भाग्य, उर्मिल बिनु कारण सहथि विरह
संबंध हमर आ आर्यपुत्र! पसरल अछि शून्ये अगह-बिगह
श्रुतकीर्तिशत्रुघ्नकस्थितिबुझितोकिछुकहबसुनबनहिलगयपार
जा धरि न भाय सभ घुरि अऔता, नहि रात्रि बितायब भवन आब।

से सहलनि राम, संगहि सीता, लछुमन कि उर्मिला नहि सहलनि
पाषाण बनल भरतक पीड़ा, नहि किन्तु जननदायिनि बुझलनि
माँ कौशल्या, कैकेयी सुमित्रा सभ त' निज दु:ख नुकबै अछि
जमि वज्र बनल हियमध्य नोर, जल बनि न आंखिसँ टघरै अछि।

अभिशप्त मात्र दशरथ न छलथि, जन- जन डूमल पीड़ाक जलधि
आखेट छलै, नर-वध कि पिता-माताक आहि पचतै केहि विधि?
हम एतय मात्र काव्यक ब्याजेँ किछु अश्रु बिन्दु सोझाँ रखलहुँ
जे रहल अलक्षित कविक कलम, अनुताप हियक, वर्णन कएलहुँ।

अछि बर्ख बहुत सहबाक एखन, हे माइ दियौ धीरज समुचित
मिथिलाक धिया दुर्बल न पड़थि, कष्टक पहाड़ आबओ सम्मुख
हे पिता, पितृव्य भरोस करू नहि उलहन कथपपि भेटत क्वचित्
हम तीन एतय, दीदी वनमे, मिलि अवध करब श्री-अभिसिंचित्।

अछि श्रान्त कलम आ क्लान्त मनस्, नि:शेष व्यथा मैथिल ललना
किछु क्षण नीरव, किछु शान्ति भेटनि, पुनि करत जगत्शक्तिक कलना
लय तेजपुञ्ज हुनि चारि बहिन, स्त्री शक्तिक पुनः लिखब परिचय
अछि क्षुद्र बुद्धि, सियकृपा किन्तु, हम लिखल आदिशक्तिक जय जय।

श्रुतकीर्ति

जखन कुशध्वज गेहमे जन्म लेल श्रुतकीर्ति
पसरल चहुँदिशि चक्र सम ज्योतिक अद्भुत दीप्ति
प्रमुदित अति जननी छलथि दीदी भेलि नेहाल
पाबि खेलौना माण्डवीक पूछू जुनि किछु हाल ।

सुन्दरता लखि केओ कहय मुख छनि कमल समान
भगवतीक दुइ आंखि सम बहिन दुहू अनुमान ।
सर्वविदित चारू बहिन पललथि काका गेह
प्रथित जनकपुरमे छलै सभ बहिनी केर नेह ।

उर्मिला श्रुतकीर्ति केर चित्त न रहै छल थीर
मुदा जानकी माण्डवी नेनहिसँ गम्भीर
एक लग्न सभ बहिन संग चारि भाइ गठजोड़
के ककरासँ कम छलै, श्री शक्तिक छल होड़ ।

गुणनिचय वर्णना नहि एतय, आइ हमर अभिप्रेत
बहिन चारि हित छल प्रथित, सभहि एक पर एक
कखन ककर खगता कथिक सभक ध्यानमे मग्न
चुप मुँह सेवा सासु केर, कृत्य करैमे लग्न ।

दूरदृष्टि नय नियममे कुशल छलथि श्रुत कीर्ति
प्रजाजनक मनमे न हो असुरक्षा केर भीति
जेठ कुँवर वनवासमे, भरत ग्लानि केर ग्रास
श्रुतकीर्तिक बलसँ कमल शत्रुघ्नक छल त्रास ।

भरतक दहिना कर छलथि अनुज हुनक शत्रुघ्न
शासन केर सभ काजमे तत्पर तन-मन लग्न
संशय जखनहि कथुक हो पत्नी सदिखन साथ
परामर्श समुचित दितथि, करथि न कखनहुँ लाथ ।

रिक्त हस्त बिनु रामकेँ घुरलथि अवधक लोक
काननसँ नेने एलथि शाश्वत सभ केओ शोक
सिंहासन पर पादुका, भूमि भरत केर सेज
कर्म सकल होइ छल मुदा सभहि भेल निस्तेज ।

लखन जेना राघव संगे दिवा-रात्रि छथि संग
रहब हमहुँ नृप भरत लग, करब ने नियमक भंग
कहि चललथि शत्रुघ्न निज प्रियाक हाथ छोड़ाइ
निर्णय स्वेच्छासँ करब, समय दिय' किछु आइ ।

अहाँक मनमे भ्रम कियै उपजल कहु हे नाथ
बहिन सभहि बिरहिनि बनलि, हम चाहब तुअ साथ
बेर न अछि वैराग्य केर, शक्तिक बल साम्राज्य
पति-पत्नी नहि मित्रवत्, मिलि चलबै छी राज्य ।

राजनीति दुइ भाइ अहँ, बुझी न मन संदेह
तदपि चर्च जँ बुझि उचित करी आबि निज गेह
नइहरमे काका करथि गहन मन्त्रणा घरमे
काकी अम्बा सभ बहिन सुनल सकल छल संगमे ।

तेँ किछु नय- नियम केर, हमहुँ बुझै छी बात
कखन कथा हो सन्धि केर, कखन होमय अभिघात
एसकर मनसँ छी बहुत, तजू न ई प्रासाद
सक्कत बनि करबाक अछि, निज सुख बादक बात ।

अपराधक नहि बोध हो देखि सकल सुत भाग्य
चारि युगल, चारू पृथक्, जननी हित दुर्भाग्य
बूझि मनस्तल हुनक किछु, बनल रही सामान्य
वचन हमर संयम अटल, कथमपि होयत अमान्य ।

तेजक बल पत्नी नयन, गौरव उबडुब भेल
शत्रुजितक कुण्ठा सकल क्षणहि दूर भए गेल
तकर बाद चौदह बरख, क्षण भरि नहि अवकाश
गुप्त रहल रनिवासमे अतुलित तप अभ्यास ।

परामर्श निज बुद्धि गुण दैत रहलि श्रुतकीर्ति
शासनमे सहयोग कए, बिलहथि ज्ञानक दीप्ति
खड्ग छलै नहि कर हुनक, नहिए सत्ता शक्ति
शब्द अल्प, कर्तव्यमे सहयोगे पति भक्ति ।

शिलालेख पर नाम नहि, कलम न कवि केर प्राप्य
किन्तु अवध केर तन्त्रमे, श्रुतकीर्तिक अछि साक्ष्य
कनिष्ठिका मिथिभूमि केर नहि दुर्बल नहि दीन
संकटमे धीरज अतुल, सदति कृत्यमे लीन ।

सभक नजरि प्रासाद पर, दृष्ट न भू-आधार
सुंदरता फूलक मुदा, जड़ि न बनै अछि हार
इतिहासक मुखपृष्ठ नहि मात्र महत्त्वक बात
अनगिनती नेपथ्यमे सदति तपौलनि गात ।

ओहिमे एक अदृष्ट छलि, सबल शत्रुजित जाया
बहिन सासु सेवा निरत, पतिक बनलि ओ छाया
चौदह बरखक समय जे बितलै कठिन कराल
निज सुख चिन्ता तजि सदा सभक पुछै छलि हाल ।

मिथिभूमिक छोटकी धिया, आबि अवध निर्वाक
हड़बिड़रो उठलै जखन, लेल भार तजि धाख
रामक पाछाँ भरत छथि, भरत पाछु शत्रुघ्न
अनुयायिनि पत्नी बलेँ, अवध रहल निर्विघ्न ।

शब्द पुष्प शुभ माल्यसँ श्रुतकीर्तिक सत्कार
शुष्क विदीरित धरा पर वृष्टिक एक अछार
गर्वित अछि मिथिलाक जन, देखि सुता गुण खान
वर्णन जँ करबै न हम, केओ करतै कियै आन ।

मृदुता पुष्पक प्रीतिमे, धीरज सङ्कटकाल
शील, क्रिया-अनुकूल क्षण, सजबै अवधक भाल
स्नेह, मान, गौरव बहुत, अहँ पर छोटकी दाइ
स्मरण गुणक कए पुलकसँ भरि रहलहुँ हम आइ ।

अर्जुनक उत्ताप

ऋषि व्यास अवतरित एहि धरती,
देलनि जगकेँ उपहार अमित
वर्तमान सुधरओ, भविष्य रक्षित
पुराण लिखलनि एहि हित ।

सर्वत्र कहथि ओ द्वन्द्वरहित
परपीड़न पापक कारण अछि
पर-भल कएलहुँ आजीवन जँ
ओ पुण्य, भवाब्धिक तारण अछि ।

तप सिद्ध पराशर पुत्र व्यास
कानन जनिकर आवास छलनि
लिखलन्हि अनेक ओ ग्रन्थ, लोक
पथ धर्म चलय अभिलाष छलनि ।

अछि एक महाभारत ओहिमे
थिक पंचम वेदक नाम जकर
धर्म-मोक्ष आ अर्थ-काम-
विषयक जे तथ्य, न मोल तकर ।

जे 'भारत'मे, अन्यत्र भेटत,
नहि कतहु भेटत जे अछि न एतय
सभ विज्ञ कहथि ई अछि विशाल
ज्ञानक आकर सन्निहित जतय ।

आख्यान- उपाख्यानक सागर
उपजीव्य काव्य ई आन कविक
बहु भाँति निबद्ध गभीर गिरा
अति प्रखर रश्मि ई ज्ञान रविक ।

अछि बहुत कथा एहिमे परन्तु
केन्द्रित कएलहुँ बस पाण्डव धरि
नहि पाँच, मध्य जे छथि अर्जुन
थर-थर कँपैत छल सम्मुख अरि ।

छल पीर हृदयमे असह, सुनल के
जिष्णु किरीटी केर विलाप
रहि गेल अलक्षित ऋषिवरसँ,
देखलनि प्रत्यञ्चा पर चढ़ल चाप ।

ओ पृथाक कनिष्ठ तनय फाल्गुन
अति सौम्य, सुरूप, सुवीर अहो
वैषम्य अनेक भुक्त कुरुकुल
स्थिरचित्त तदपि सम हुनक न हो ।

लखलनि सभ नैपुण्य शस्त्र
टंकार गाण्डिवक छल परिचय
ओ वीर धनुर्धारी अर्जुन
कवि लिखलनि गुण वीरत्व निचय ।

श्री व्यास चलौलनि कलम प्रचुर
शौर्यक, नहि बुझलनि किन्तु हृदय
अंतस् केर देखितहुँ आलोड़न
हे कवे! कहथि अर्जुन सविनय ।

हम श्रेष्ठ धनुर्धर भारत केर,
हम विजय, धनञ्जय, फाल्गुन छी
हम सखा कृष्ण केर, अनुयायी
ऋजु मार्ग, इन्द्रसुत अर्जुन छी ।

हम गुरुप्रसादभागी अनल्प,
जे फोलल शिक्षण-पथ-प्रशस्त
श्री चरण हुनक लए आनल छल
पाञ्चालराजकेँ विवश, पस्त ।

राधेय रंगशाला जहिखन
युद्धक आह्वान करय निर्भय
कुल-गोत्र-कथा कुलगुरुक तखन
लज्जाक हेतु नहि दैत अभय ।

ओ छलै वीर केर ललकारा
उत्तर न अशक्य छलै हमरा
विश्वास न छल की शक्ति हमर
हे गुरो!कियै रोपल झगड़ा?

ओ वीर असंशय, न्यून न हम
कौशल, न साधना, शौर्य न कम
होइतै जँ द्वन्द्व तखन देखितहुँ
दम्भीक मान झट तोड़ितै दम ।

ओ जँ विजयी, फेर होइतै की
उद्यम अभ्यास न करितहुँ की
नैपुण्य पाबि पुनि जिततहुँ हम
नहि अहँक नाम हम करितहुँ कम ।

ई अहंकार राजन्य मुदा
मनसँ न भेद स्वीकार कएल
मर्यादामे बन्हल विवश,
लाचार शिष्य चुप ठाढ़ रहल ।

परिणाम तकर की, सभ देखल
जड़ि असंतोष, कौरव सींचल
ओ तेजस्वी बनि कठपुतरी
अति अकरणीय कृत्यें डूमल ।

एहि मध्य घटल घटना कतेक
नृप पूज्य पितृव्यक शह पबैत
दुर्योधन हत्या यत्न कएल
पाण्डवसँ ईर्ष्या छल एतेक ।

पुनि सुख विहीन सभक जीवन
छलि माइ संग तेँ हीन न मन
बाल्येसँ सत्त्व रजोगुणसँ
पूरित छल देह-मनक कण कण ।

सूनल तखने पाञ्चाल मध्य
वर स्वयं चुनय लेल कठिन लक्ष्य
रखलनि नरेश, के बुझत तथ्य
दुष्कर विवाह पुत्रीक सत्य ।

परिचय अलक्ष्य छल विप्र वेश
नहि सज्जित मुख, छल जटा केश
तैंयों न प्रवेश निषिद्ध ओतय
द्विज वीर हेतु पट फुजल ततय ।

गुरु कृपा लक्ष्यकेँ भेद कयल
कर वीर्यशुल्क कृष्णाक लब्ध,
नहि किन्तु अग्निगर्भाक संग
हा, हन्त सदोष हमर प्रारब्ध ।

छलि हमर प्रिया नहि ओ केवल,
सम वस्तु, पाँच पांडव-रानी
नतशिर माता आदेश धयल
नहि किन्तु बुझाइ हँसी-कानी!

ओ एक दृष्टि तनयाक द्रुपद
जयमाल्य गड़ामे स्पर्श मात्र
ओ वरण व्यर्थ स्पर्धा निरर्थ
घाहिल आत्मा जड़ भेल गात्र ।

की छलै नियम की अनुशासन
नहि धर्मराज प्रतिकार कएल
नहि मित्र कृष्ण न पिता स्वयं
किञ्चित् स्त्री मनक विचार कएल ।

सापराध दुइ वर्ष सघन तपरत
हम काल बिताओल छल
शस्त्रास्त्र दक्ष, शिव कृपा पाबि
संतोष अमृत किछु पाओल छल ।

हम दिव्य अनेको आयुध लए,
उपविष्ट सभा विश्रांत गात
हा हन्त! उर्वशी भए सरोष,
दए देलनि निष्ठुर असह घात ।

हतबुद्धि निराश अदोष मुदा
कियै दण्ड असह लिखि नियति हँसै
देलनि प्रबोध दु:ख देखि इन्द्र
ओ श्राप वर्ष ध्रुव फलद हेतै ।

नहि शम्य हस्तिनापुर केर झगड़ा
लखि भूपति खाण्डवप्रस्थ देल
मिलि भाइ सकल पुरजन प्रियजन
निज उद्यम इन्द्रप्रस्थ रचल ।

अत्यल्प दिवस छल सुख शान्तिक
पुनि द्यूतक व्याज उठल उधबा
ओ तिरस्कार, वैवश्य-बोध
उरमे पजरल शाश्वत धधरा!

दोषी दु:शासन कर्ण शकुनि,
दुर्योधन अथवा धर्मराज
जे मर्म धर्म केर बिनु बुझने
पगतल धेलनि स्त्री-लाज, ताज!

हम क्लीब बनल, दासत्व गहल,
अपशब्द लांछना विवश सहल
सम्मुख आंखिक भार्याक चीर
निस्त्रप कौरव छल खींचि रहल ।

सम कील, विषम दु:ख दारुण ई
हिय-धँसल, क्रूर अभिशाप रहल
काननक वास, अज्ञातवास
नहि दण्ड अपितु वरदान रहल ।

प्रतिकार प्रमुख, बस लक्ष्य एक
संचय शक्तिक तप निशा-दिवस
राजाक पुत्र वीरत्व निकष
वन कंटक दंश सहल अपयश ।

ओ शोक कोन जे भेटल नहि
अपवाद कोन जे सहलहुँ नहि
गुरु द्रोण पितामह भीष्म पूज्य
किनका हम शरसँ बिन्हलहुँ नहि?

की छल बितैत उर-अंतस् मे
बनि क्लीव नृत्य शिक्षक अर्जुन
प्रत्यञ्चा धनु नहि शक्य तखन
छल शिक्ष्य श्राव्य नूपुर रुनझुन ।

एतबहि किऐक कीचक कुदृष्टि
सैरन्ध्री बनलीह ग्रास जखन
हम विवश किन्तु अग्रज भीमे
कीचककेँ देलनि त्रास तखन ।

आ युद्ध महाभारत पातक
मर्यादा सभटा ध्वस्त भेल
नहि अपर पक्ष, हमरो पक्षेँ
मानवता धूमिल पस्त भेल ।

हम शौर्य-धनी जीतक हारिक
परबाहि न, युद्धे धर्म बुझल
अछि बूझल वध गुरु श्रेष्ठ द्रोण
न्यायोचित कथमपि कर्म न छल ।

कर्णक वध यद्यपि प्रण पूर्वक
प्रतिपक्षी छल बिनु अस्त्र मुदा
संधान बाण नहि योग्य पार्थ
ई अनौचित्य सालैछ सदा ।

नहि कहि पाबी ई व्यथा कतहु
हम पाण्डु पुत्र पाषाण खोल
हम क्षत्रिय, बाहु हमर परिचय
जग नहि बुझैछ मम अश्रु मोल ।

मधुसूदन मात्र सखा हम्मर
बूझैत छलाह उर ताप-शाप
सभ कष्ट नुकौने अरि सम्मुख
धनु पर चढ़ैत छल सदा चाप ।

ऋषिवर लिखलनि मम शौर्य विपुल
हिय पीर मुदा नहि ओ बुझलनि
कौन्तेय बनल सैनिक प्रतिपल,
अरि-वक्ष- रुधिर बहइत देखलनि ।

सामान्य जनक नहि क्षोभ कवे !
देखल नहि अपनहुँ हिय-गह्वर
नहि शिला पार्थ, उर वेदन पर
किछु शब्द लेप मलियौ सत्वर ।

कहबै ककरा, के सुनत व्यथा
कवि, तजि के हृदयक भाव गुनत
अभिमन्यु सदृश सुत होम भेल
पाण्डव अपुत्र, के शोक बुझत?

सिंहासन कुरु कुल मूल्य एतेक
नहि युवा न सैनिक शेष बचल
एहि ठाम मात्र विधवा विह्वल
जननी काकी सभ विपिन बसल!

अभिशप्त पाँच पाण्डव जीवन
युद्धक फल कुफल सहैत बितल
नहि हर्ष शेष, उत्साह लेश
कवि, बुझियौ कष्ट अनेक सहल ।

हे सरस कवे!आयुध सज्जित
वीरोक हृदय जलधार बहय
ओहि एक बुन्नसँ गुडाकेश
भवसागर कहुना पार करय ।

याज्ञसेनीक आलाप

हम मानवी अथवा कि कोनो यन्त्र
नहि ई बूझि पौलहुँ
मातृजा नहि यज्ञजा सुनि
तथ्य ई हम अकबकेलहुँ ।

भेल हेतनि नहि जननिकेँ
गर्भ स्वाभाविक जखन
पाठ पूजा, चिकित्सा विधि
एलहुँ धरती पर तखन ।

युग्म संतति सुत सुता लखि
मुदित माता पितु छलाह
भ्रातृ भगिनी केर सुशिक्षण
हित सदा उद्यत भेलाह ।

नहि छलै किछु भेद सुत
किंवा सुतामे ताहि दिन
शास्त्र-शस्त्रक ज्ञान सम्यक्
सुगुरु देलनि राति दिन ।

भैया हमर संगे समय केर
भाग बहु बितबैत छथि
भ्राता शिखण्डी किन्तु नहि
कौखन कतौ अभरैत छथि ।

आधान तथ्यक एक सदिखन
मनस् मे गुरु भरि रहल
द्रोण नामक विप्र दम्भी
नृप-अवज्ञा कए चुकल ।

किन्तु ओ अति निपुण योद्धा
शिष्य सभ सेहो कुशल
प्रतिकार तेँ अति कठिन
अद्यावधि रहल छथि तेँ बचल ।

पुत्र केर ई काज पहिलुक
प्रतिष्ठा जनकक बचाबय
दलन दर्पक कए रिपुक
धर्म संतति ओ निमाहय ।

एकटा बस ध्येय जीवन
द्रोण संहारे बनल
आन किछु रुचि वा कि चर्या
नहि उभय मनमे रहल ।

किन्तु बढ़ितहि वयस माता
देखि लक्षण माथ धए
साज-सज्जा, लाज, मर्यादा
सिखौलनि जोर दए ।

पांचालीक कर केर योग्य
पति एहि लोकमे अछि के बनल
रूपसी अभिमानिनी नारीक
वर अछि के जनल?

बात सुनि सुनि सदति ई
हम गर्विता अतिशय भेलहुँ
आन क्यो नहि मम सदृश
अभिमानसँ भरि हम गेलहुँ ।

बादमे मद ई हमर
अति कष्ट केर कारण बनल
यातना अपमान आजीवन
अकारण हम सहल ।

अस्तु ई थिक कथा बादक
एखन यौवन मद भरल
योग्य वर भेटए पिता भ्राता
स्वयंवर छथि रचल ।

एहिबीच मधुसूदन एलाह
कहलनि पृथासुत गुण अधिक
ओ धनुर्धर योग्यतम मृदु
भाव उपजल सुनि तनिक ।

किन्तु संशय अछि न कुन्ती
पीसि नहि भ्राता सकल
जीबिते छथि वा कि गेला
मृत्यु मुख लहकल अनल ।

मत्स्य आंखिक कठिन भेदन
योग्यता छल वरण केर
युक्ति ई केशव बताओल
मति थिरौलनि जनक केर ।

एहि जगत केर सकल भूपति
छल जुटल पांचाल में
वीरता केर दम्भमे किछु,
स्वल्प छल कुटिचालमे ।

बहुत दिग्गज सभक कौशल शौर्य
तत्क्षण भेल निष्फल
किन्तु कर्णक निपुणता लखि
भेल भय, होयत सफल ।

किन्तु नहि एकरा वरब,
अधिकार वर चयनक हमर
वारि तत्क्षण, हम केलहुँ
अपराध, फल भोगल तकर ।

ओहि वयस नहि योग्यता
नहिये हृदय परिपक्वता
हाथ धय आगाँ बढ़ाओल
वा कि मम भवितव्यता!

लक्ष्य भेदन दक्ष अर्जुन हित
निकष नहि छल सुदुष्कर
मुदित भए जयमाल्य देलहुँ
कण्ठ सर्वोत्तम धनुर्धर ।

किछु क्षणक ओ मोद,
नहि किछु ज्ञात भाग्यक खेल
मान सभ, अभिमान सभ
क्षण एक धूमिल भेल ।

कएलनि जय 'विजय' हाथ हम्मर
नहि किन्तु हमर ओ बनि सकलथि
तन-मनक समर्पण हुनका प्रति
पति हमर पूर्ण नहि कए सकलथि।

भावी छल प्रबल कि पूर्वजन्मक
किछु पाप पाछुमे धेने छल
शिवसँ मांगल वर गुणी पतिक
सभ गुण न एकमे संभव छल ।

ई कथा कहै छथि मधुसूदन
नहि स्मरण मुदा हमरा किछुओ
भवितव्य कोना बलसँ धकेलि
खसबैछ न संशय अछि कनियों।

हँ पाबि धनुर्धर सर्वश्रेष्ठ
आनन्द उदधिमे डूमक क्षण
अत्यन्त स्वल्प हा!भाग्य हमर
पाथर कठोर नहि हीरक कण ।

दोष दैवक ई प्रबल
किंवा निठुर आदेश मायक?
वस्तु केर परिचय प्रथम दए
कएल अथवा दलन मानक?

नित्ययौवना, याज्ञसेनि हम,
सभ पाण्डव केर रानी छी
खण्डित स्वप्न, रक्तरञ्जित उर,
तखनहुँ हम साम्राज्ञी छी ।

छी अचंभित नहि बजथि किछु पिता
नहि किछु ज्येष्ठ भ्राता
देवकीनन्दन सेहो चुप
बुझल जनिका सदा त्राता ।

संतुलन साधैत हम
असिधार पर चललहुँ सदा
भाइ सबहक मध्य
नहि संदेह हो कनियों मुदा ।

स्वल्प दिन बीतल कि जे
सुख शान्तिसँ परिपूर्ण छल
लखि सुयोधन हास मुख केर,
त्रुटि एतेक की पैघ छल?

नहि जानि की भए गेल छल
हम शिष्टता सीमा टपल
श्वसुर लेल अपशब्द कहि
दुर्योग आमंत्रित कयल ।

आइ धरि नहि बूझि पौलहुँ
मति कोना दुर्मति बनल
अग्नि छल मम उत्स
दाहक अछि कि संभव ओ रहल।

आह! जिह्वासँ खसल दुइ शब्द
संहारक बनल
सम्मान, सुख पाण्डव कुलक
हा हन्त! कुल घातक बनल!

देखि लेल तखनहि भृकुटि छल
सखा केशव केर तनल
यज्ञ हित आहूत अतिथिक
अवज्ञा बरबस कयल!

बोल मुख केर तीर तरकस
नहि घुराओल जा सकय
भवितव्य आगू नर सकल
गर्त अविवेकक खसय ।

अभिमान नहि भेल न्यून तखनहुँ
मांगि भेल नहिए क्षमा
ओ चोटाहल आंखि कुरुसुत
भाग्य नभ पसरल अमा ।

भाग्य हम्मर देखि लिअ'
केशव सदृश मम छल सखा
पति धनुर्धर श्रेष्ठ भारत केर
प्रसृत कीर्ति-प्रभा ।

एक नहि, संग चारि भर्ता
वीर्य बल गुणसँ भरल
किन्तु दुख अछि कोन जकरा
भाग्यहीना नहि सहल ।

दाँव पर भ्राता लगाओल
सुनल की इतिहासमे?
प्रिया पत्नी वस्तु सम,
पुनि राज्य केर अभिलाषमे ?

मध्य गुरुजन, कुरु सभामे
भेल जे अपमान छल
हाय नारी रूपसी! एहि पर
एतेक अभिमान छल?

दुर्गम वनक सभ कष्ट पति संग
सहल तेरह वर्ष हम
यत्न पाण्डव-हृदयसँ हो
वह्नि प्रतिशोधक न कम ।

वेदिजा दुर्भाग्यवश
सैरन्ध्रि रानी केर बनल
पाँचटा पति किन्तु कुत्सित
दृष्टि कीचक केर सहल ।

सभ नष्ट भेल प्रियजन समस्त
रण काल गाल केर ग्रास बनल
भ्रातृ बन्धु प्रिय पुत्र रुधिरसँ
क्लिन्न क्षेत्र विकराल बनल ।

संग्राम न युक्तिसंगत कनियों
छल बल प्राधान्य रहल एहिठाँ
भेलथि विजयी पाण्डव परञ्च
ओ चैन तकथि एहिठाँ ओहिठाँ ।

दु:शासन केर रुधिर सानि
हम केशराशि बान्हल किऐक
की छल नुकैल ई कृत्य दानवी
मानव भए कएलहुँ किऐक?

अन्याय जखन तजि कए सीमा
गर्जना घोर करतै अविकल
राज्यक धन वैभव प्राप्ति-हेतु
धृतराष्ट्र सदृश रहतै अविचल ।

जखनहि सम्मान त्रियाक
परिधि प्रश्नक चहुँओर घेरैल रहत
भीषण प्रतिघात मही नियतिक
एहि भाँति कठोर सहैत रहत ।

नहि कहल कथा निज न्याय हेतु
संवेदन केर नहि लेप काम्य
कथमपि न परिस्थिति रचू एहन
प्रतिशोध मात्र हो जखन भाव्य ।

सहन दुष्कृति जन्म दै अछि
अनय वृक्ष विशालकेँ
झट उखाड़ी मूल ओक्कर
प्रश्रय न दी दुष्कालकेँ ।

वारितथि नृप प्रथम जखने
विष पिआओल भीमकेँ
दण्ड दए लाक्षागृहक
अभियुक्त दोष असीमकेँ ।

किन्तु निज लिप्साक पूरणटा
जकर लक्ष्ये रहल
भोग-सुख सुत सभ करथि
ई भावटा रक्ष्ये रहल ।

हम द्रुपदसुता नहि बुझि सकलहुँ
ई नीति कुनीतिक बिछल जाल
सामान्य भ्रातृजायाक भाँति
किछु कयल हँसी जे बनल व्याल।

भोगल असह्य परिणाम तकर
किछु अहंकार हमरहु कारण
निष्ठाक नाम पर अन्ध नृपक
सुत मोह परञ्च समर कारक ।

जा धरि न न्याय हित बात उठत
प्रतिकार तुरत पापक होयत
धर्मक न मर्म, बस बाह्य रूप
सर्वत्र अधर्मक वेश धरत ।

होयत भीषण परिणाम तखन
तेँ सावधान, निज कर्म चुनू
नहि लोभ मोह मद मत्सरमे
भए अधम डूमि दुष्कर्म करू ।

रण केर न भेलै परिणाम सुखद
नहि वर्तमान अथवा अतीत
ताण्डव युद्धक नहि लखै लोक
अनुभूति कहल तेँ मीठ-तीत ।

नहि लब्ध सुखक क्षण एक किन्तु
प्रतिकार कएल निज साध्य सदा
हम कुसुम स्तवक सम्मान पाबि
आकर अग्निक अनिवार्य मुदा ।

हम युक्त, प्रेम भावना तरल
नहि सह्य मुदा अपमान गरल
नहि कथमपि पगतल दाबि अहाँ
जगकेँ देबै सुख शान्ति सकल ।

हम द्रुपद सुता पाण्डव भार्या
यद्यपि भोगल दुस्सह कलेश
तैंयों न कहब अन्याय सहू
स्त्री आन-मान अक्षत सनेश ।

कुन्तीक व्यथा

दुहिता शूरसेन केर छलि ओ
कुन्तिभोज कएलनि पालन
उदधि दुलारक हेलि रहलि छलि
परिचय नहि किञ्चित् शासन ।

ऋषि रुक्ष तपस्वी दुर्वासा
किछु दिवस बिताओल राजभवन
नरपति विश्वस्त सुता कुन्ती
श्रद्धा-सेवा करती अनुखन ।

नृप केर पुत्री प्रति छल अगाध
विश्वास न किञ्चित् अर्थहीन
क्षण एक न कयल प्रमाद सदा
बनि प्रौढ़ा बाला कर्मलीन ।

फल तकर देलनि ऋषि भए प्रसन्न
अथवा भवितव्यक छलनि भान
पतिसुखक कोश लखि रिक्त तपी
अद्भुत अनुपम वर देलनि दान ।

पुनि राजसुता निज भवन आबि
सुख दोला पर झूलथि अनुखन
इच्छानुरूप सभ काज करथि
चञ्चला मृगी सम ओ अनमन ।

नहि छलथि केओ ज्येष्ठा नारी
माता कि पितृव्या ओहि भवने
अनुचित-उचितक जे दितथि ज्ञान
व्यवहार-ज्ञान रहलनि शून्ये ।

उष:किरणक सुदीप्ति पसरल प्राची
लखिते रहलथि, नहि नयन भरल
अम्बरपट भेदल सूर्य जखन
सौंदर्य शौर्य हुनि अवश कयल ।

स्मृतिमे हठात् ऋषि-वर आयल
पढ़ि मन्त्र सूर्य आह्वान कयल
ओ तेजपुञ्ज सुपुरुष सहर्ष
कुन्तीक कामना-मान कयल ।

ओ क्षण आवेगक छलै जतय
परिणामक चिन्ता स्थान कतय
मन युवा उड़ै सम पत्र शुष्क
नहि शेष ज्ञान गन्तव्य बचय ।

किन्तु सत्य एहि जन-समाजमे
स्वातंत्र्यक अछि सीमा
शिशु कुमारि कन्याक कुक्षिमे
सह्य न हाय ! स्थिति भीमा ।

विश्वस्त एक दासी परन्तु
नौ मास पृथा केर ध्यान कयल
छथि स्वस्थ न राजकुँवरि कहि कहि
एकान्त स्थान शिशु प्रसव कयल ।

कानीन पुत्र केर जन्म हन्त !
केहि भाँति जगत् स्वीकार करए
तेँ विलग भेल शिशु सुत तत्क्षण
नहि जानि कोना माँ धैर्य धरए ?

सुखमय भविष्य हित ई अनीति
खण्डित स्वार्थे मातृत्व-धर्म
कय लाथ भयक वा अपवादक
बढ़ि चललि पृथा कए कठिन कर्म !

नहि किन्तु चैन ओहि दिनक बाद
क्षण भरिक पृथाकेँ भेटि सकल
अपराध छलै अक्षम्य जकर
परिणाम भयानक नियति रचल ।

कुन्ती सभ बिसरि नवल जीवन
जीबाक हेतु नव बाट चुनलि
जयमाल्य पाण्डु गरमे सजाय
सुख स्वप्न रुचिर लय बिदा भेलि ।

लखि स्वर्णकान्ति युवराज भेलि
आश्वस्त पृथा, सौभाग्य अतुल
हँसि रहल कुटिल गति दैव मुदा
प्रारब्ध कठिन, किंचित् न मृदुल ।

हतवाक् हस्तिनापुरक वधू
सहचरक रुग्ण छनि तन-मन
स्वप्नक टूटक ई ध्वनि कठोर
नहि सुनय अन्य केओ जन गण ।

क्षण-क्षण स्मृतिमे ओ तनय अबनि
निज सुखक हेतु तजलनि जकरा
शल्यक पीड़ा प्रच्छन्न पाप
दय रहल, मुदा कहती ककरा ?

सम्मान लेल मातृत्व धर्म
तजि, कएल दुरित अपराध पृथा
ओहि हेतु झाँपि दौर्बल्य पतिक
दु:ख दाबि हृदय ओ हँसथि वृथा।

नहि मुदा छलै ओ युग, जत्तय
नृपकुलक हेतु सुत प्राप्त न हो
ऋषि-वरसँ पओलनि काननमे
सुंदर सुवीर सुत तीन अहो !

मानक- मर्यादा स्थिर न छलै
मोड़य- तोड़य निज स्वार्थ हेतु
ओहि राजभवन त' ओरहि सँ
परपुरुष बनै छल वंश सेतु ।

नहि छलै स्पष्ट की मर्यादा
सन्ध्याक कालिमा, नहि विहान
छल शक्ति जतय ओ सुविधासँ
न्यायक लिखैत छल नव विधान।

नहि पाण्डु छलथि पति तुल्य किन्तु
प्रिय मित्र सदृश सभ सुख तजलथि
वनवास- समय कुन्ती-माद्री
अवसाद नृपक बहु बिधि हरलथि।

नहि संग पतिक बहु दिवस प्राप्य
असमय नश्वर ओ देह तजल
माद्री शिशुद्वय निज सौंपि अपन
चढ़िचितापतिकदिविगमनकयल।

वैधव्य-दंश, शिशु संग पांच,
घुरली सासुर निरुपाय पृथा
अधिकार भेटय सुतकेँ राज्यक
नहि हड़पि सकै केओ भाग वृथा।

षड्यंत्र अनेको कुरुकुल केर,
भयभीत करए रजनी कारी
भीमक विषपान कि लाक्षागृह,
तैंयों नहि हारलि ओ नारी ।

भटकैत रहलि कुन्ती वन-वन
सुतकेँ न किन्तु दुर्बल मानल
वृत्रासुर- वध केर योग्य
भीम प्रियकेँ सहर्ष जननी जानल।

सहदेव-नकुल शिशु औरस सम
कुन्ती समरूप सदा बुझलनि
पांचाली-कर कए उर कठोर,
सभ सुतक भागमे ओ बँटलनि।

ओ छलै असंशय अनय, किन्तु
नहि बनथि भ्रातृद्वेषक कारण
सौंदर्य सुधा साकार देह
पाञ्चालसुता जोड़क साधन ।

किछु नीति-नियम धर्मक व्याख्या
किछु कृष्णक बोधन बनल साध्य
स्मृति पूर्वजन्म माँगल वर केर
कएलनि जननी आदेश मान्य ।

नहि किन्तु काज आयल कोनो
नय-नीति न शान्तिक उठल डेग
पग-पग लाञ्छन पुतहुक परन्तु
सहि सकलि न, क्रोधक उठल वेग।

क्षत्राणी जाहि जय हेतु, प्रसव
पुत्रक कए गौरव पाबै छथि
संदेश हाथ कृष्णक पठाय,
कुन्ती रण हित अति व्याकुल छथि।

अतिशीघ्र मुक्त हो धरा अन्ध
तन-मनक रुग्ण कपटी नृपसँ
हो पुनः धर्म केर राज़, मिटए
छल- छद्म शीघ्र राजगृहसँ !

प्रतिकार-हेतु सन्नद्ध बनथि सुत,
कथमपि न विस्मरण अनयक हो
स्थिरचित्त छलथि, ई धर्मयुद्ध
नहि टरय, न चिंता विजयक हो ।

कुन्तीक शक्ति पाथेय बनय
सम- विषम परिस्थिति धैर्य रहय
सुत नहि निरीह निरुपाय बनय
रणमे जग अनुपम शक्ति लखय ।

अहिल्याक प्रश्न

हे राम ! पूज्य छी अखिल विश्व,
हम पाबि चरण रज धन्य भेलहुँ
अपमान गरल सहि बनल शिला,
कए स्पर्श प्राण हे राम ! देलहुँ ।

मर्यादा पालक प्रभु ! बुझलहुँ,
आहाँ स्त्री केर पीड़ा अशेष
अपराध एक, दण्डित हमहीं,
भोगल कलङ्क, नर छल विशेष !

चिरकाल प्रतीक्षामे बीतल,
अएलहुँ हम्मर अभियोग सुनल
घोषित कए दोषमुक्त हमरा,
अहाँ मान्य न्याय केर रूप धएल ।

अछि एक प्रश्न हे दयागार !
की आहाँ सम्मुख राखी हम ?
यदि पिता पूछितथि मम विचार,
वरितहुँ एहि रुक्ष तपीकेँ हम ?

हम निखिल विश्व रमणीयतमा,
सभ देव प्रणय-परिणय आतुर
यौवन केर छल-छल कलश संग,
कुश कठिन मात्र रहितय आञ्जुर ?

जीवन हम्मर, तन-मन हम्मर,
हिलकोर लैत उद्दाम लहरि
समिधा-सञ्चय, तप आ कि यज्ञसँ
इच्छा भोगक नहि सकल ठहरि ।

धएने गौतम केर रूप इन्द्र,
अयलाह बनिकए बड़का सुवीर
हम चीन्हल नहि ओ मायावी,
कएलहुँ अर्पण तन भए अधीर ।

पएने रहितहुँ सामीप्य पतिक
नहि स्पर्श हुनक की चिन्हि सकितहुँ
श्वासक सुगन्धि, बाहुक कसाव
आलिङ्गन भेद न बुझि पबितहुँ ?

स्वीकार करै छी प्रकृति हमर
सात्विक न छलै ओ राजस छल
भोगक सभ वस्तु सुप्राप्य होमय
ई काम भरल मम नस-नस छल ।

देखल गौतम केर नवल रूप
कामना नयन तन उद्दीपित
किछु रहल होश नहि कही सत्य
मारक प्रभाव मन अनुगुञ्जित ।

ऋषिवर केर श्राप प्राप्य हम्मर,
अधिकार दम्भ की नरक न छल ?
कर्तव्य-लेश, सामीप्य मनक
प्रिय-भाव पतिक की कखन हुँ छल ?

एहि वह्नि-लाञ्छना अद्यावधि
जरि- जरि भेलहुँ खकस्याह सदा
पर पुरुष स्पर्श अक्षम्य, राज्य
देवेन्द्र करथि एकछाह मुदा ।

यदि अबितहुँ नहि स्वामी आहाँ,
पबितहुँ एहिना हम पदाघात
त्रुटि एक क्षणक, दारुण दण्डक
चिरकाल सहल ई कशाघात ।

सर्वज्ञ अहाँ! तैंयों मन केर
अन्तर्हित ताप कहल भारी
निजता सबहक सम्मान पबौ,
हो पुरुष वा कि होमए नारी ।

बालि-पत्नी तारा

मंथन जलधिक छल भेल जखन,
हम पएर धएल तखने वसुधा
कहि दिव्य अप्सरा सकल लोक
देखथि विशेष मम रूपसुधा ।

हम ठाढ़ इन्द्र केर सभा मध्य,
दुइ श्रेष्ठ वीर प्रस्ताव केलथि
कपिराज बालि आ वैद्यराज,
परिणयक हेतु सन्नद्ध छलथि ।

अति रूप सुरूप वैद्यराजक
प्रेमाब्धि हुनक छल नयन व्याप्त
ओहि दृष्टि उल्लसित गात्र हमर
लिलसा जागल ओ बनथि आप्त ।

अधिकार छलै नहि किन्तु तखन
स्त्री बाजि सकय निज मनक बात
ओ रहओ अप्सरा देवी वा
अभिव्यक्तिक हक नहि छलै स्यात्।

जँ भेटि गेलै सान्निध्य प्रियक
ओ स्त्रीक हेतु सौभाग्य मात्र
स्त्री विजित छलथि नर बाहु जोर
चयनित जयेष्ठक इच्छा सुपात्र ।

हमरहु न भाग्य अनुकूल छलै,
श्रीविष्णु छलथि न्यायक कर्त्ता
निर्णय कएलनि मन केर विरुद्ध
किस्किंधापति भेलथि मम भर्ता ।

ओ प्रथम दृष्टि केर प्रेम आह!
उर दाबि परिणयक मन्त्र पढ़ल
एहि जगक विचित्र न्याय सम्मुख
हम पराभूत कपि हाथ गहल ।

ओ वीर अजेय, भक्त प्रभुक,
भूपति छलाह अतिशय न्यायी
विस्मृत भेलथि शीघ्रे सुषेण,
भेलहुँ कपिराजक अनुरागी ।

अज्ञात मुदा भाग्यक लीला,
निज अनुज वैर केर हेतु बनल
ओ इन्द्र-तनय, अवतार विष्णु
केर हाथ, यमक आहार बनल ।

वैधव्य-दंश कएलक विह्वल,
निकसल मुखसँ प्रभु हेतु शाप
आजीवन हमरहि तुल्य सहब,
निज प्राणप्रिया केर विरह-ताप ।

अपशब्द, शाप मस्तक नमाय,
श्री राम सहज स्वीकार केलनि
कर्त्तव्य मात्रकेँ बना ध्येय,
अवतार प्रभुक एहि भूमि भेलनि ।

पति तोहर उद्भट वीर, किन्तु
ओ अहङ्कार केर दास बनल
दर्पे मातल ओ वीर अतुल,
पथ अनय हन्त! अविचार्य गहल।

ओ कठिन काल केर गाल गेलौ,
हम हेतु ओकर मृत्युक निश्चय
अपवाद हमर मस्तक परन्तु
हयतै बालिक सभ पापक क्षय।

हम तृप्त भेलहुँ सुनि अमियवचन,
सब शोक बिसरि, निज कृत्य केलहुँ
अंगद बनि सकए वीर अतुलित,
विद्वान्, सभ्य, सभ यत्न केलहुँ।

ई यत्न कएल सदिखन परञ्च,
नृप चलथि न्याय पथ पर अविचल
सुत केर अधिकार सुरक्षित हो,
लोकापवाद-विष सहल अचल।

हम केवल तारा, रूप-सुधा संग
बुद्धि अमित नेने अयलहुँ
मानवी संबंधक शुचिता संग
यापित सहर्ष प्रतिपल कयलहुँ।

वृहस्पति-पत्नी तारा

जे स्वयं त्राण केर आश रखए,
तारा हम, तारब ककरा
पत्नी पूज्या होइतहुँ गुरु केर,
शशि अनलनि अपहृत कए हमरा।

नहि ग्लानि स्पर्श गुरु भार्या केर
बल-दम्भ भरल अपमान करय
नहि प्रेम छलै, वैवश्य किन्तु
संयोग तनक शिशु-बीज बनय ।

हम बूझि भाग्य मन मारि किन्तु
चन्द्रक अविनय सभ कयल क्षमा
शिशु-संवर्धन, कर्त्तव्य परम
गमि नियति, माथ हम देल नमा।

नहि किन्तु वृहस्पति चैन छलथि
शिष्यक अविनय कथमपि न क्षम्य
स्त्री- मान-दलन घनघोर पाप
विद्वान् वीर गुरु हित असह्य ।

किछु मोह अबस्से हेतनि हमर
घट यौवन नित पयपान करथि
गुरु द्वन्द्व युद्ध ललकारि तखन
खड्गक प्रहार निज ध्यान धरथि।

दू पुरुष हेतु हम बनल वस्तु,
दावा छथि दुन्नू ठोकि रहल
हम की चाही, कामना ककर,
केओ कखनहुँ नहि ई सोचि रहल।

गुरु-शिष्य मध्य संग्राम तुमुल,
बनिक' न्यायी अएलथि ब्रह्मा
पराभूत रणभुवि शशाङ्क
बढ़लनि जगमे पति केर महिमा।

गर्भस्थ भ्रूणसँ, किन्तु अंगिरा-
सुतक घृणा नहि नुका सकल
परपुरुष-अंश पत्नीक कुक्षि,
मति कोन पतिक सामान्य रहल ?

ई चन्द्र-अंश तजि आन स्थान
हे प्रिये! पुनः एत्त' आयब
हम माय, हमर ममता व्याकुल,
कहू चैन कोना, कत्त' पायब ।

छल रोष सुधाकर प्रति अवश्य
ओ दण्ड पराजय पाबि घुरल
गुरु-पत्नी-हरणक असह दोष
आजन्म माथ पर ओकर लिखल।

श्रद्धा न हृदयमे शेष बचल
ज्ञानक आकर पति हेतु किन्तु
तन हमर प्राप्य अधिकार हुनक
मन पढ़ल हमर नहि एक बिन्दु।

ओ दिव्य रूपसंपन्न बाल,
बुध ग्रहक रूपमे जग चीन्हल
छल अंश हमर, दुर्भाग्य! पुरुष
दुइ हन्त! ओकर शैशव छीनल ।

ई विधिसम्मत, ई थिक अवैध
शिशु थिक कि कोनो अभियोग मात्र
प्रकृतिक निर्णय जे सकथि बूझि
जगमे छथि के ज्ञानी सुपात्र ।

ई अश्रुभरल गाथा हम्मर
सुनि स्त्रीक व्यथा अनुमान करू
जे जन्म लेल एहि धरती पर
निष्पाप शिशुक सम्मान करू ।

अनकर अपराधक दण्ड, तनय
युग-युगसँ सहिते रहल विवश
नहि बजितहुँ ई अनकहल कथा
शिशु नहि सहितै जँ कलुष अयश।

ई ग्राह्य, हेतै ई त्याज्य,
एहन मानक न गढ़ू ई थिकै पाप
हम छी अतीत, अहँ वर्तमान
गढ़ि, छाड़ि दियौ किछु रुचिर छाप।

मन्दोदरीक मुखसँ

वामांगी बनि मयतनया
दशमुखक स्वर्णनगरी अएलहुँ
धन-जन-समृद्ध ओहि नगर मुदा
निजकेँ एकाकी पओलहुँ ।

सम्मान देल स्वामी अवश्य,
छल दर्प किन्तु अतिशय हावी
निज हृदय खोलि सम्मुख राखी
विश्वासक नहि कोनो दाबी ।

दम्भ! असह ओ दम्भ! चतुर्दिक
स्वर्णपुरीमे पसरल छल
शक्ति आसुरी मदमे जन-जन
निज सीमाकेँ बिसरल छल ।

विज्ञ कहै छथि सत्य कि भय
वा आश, तीन जन प्रिय बाजथि
सचिव राज्य केर, वैद्य स्वास्थ्य केर,
गुरु सुधर्म केर पथ बिसरथि ।

शिवकृपा पाबि अभिमान भरल
सम्राट् निरंकुश अविचारी
नहि बाट देखाबय केओ समुचित
संकट समक्ष आयल भारी ।

आइ नष्ट कए देल नियति निर्मम,
मम जीवन केर शृंगार
काँपि उठल हिय छल जखनहि
नृप, कएलनि सीता केर अपहार।

अनुनय कएल जोड़ि कर हे प्रभु!
ई न धर्म, ई अत्याचार
यदि बल अछि त' हरा रामकेँ,
लए अनितहुँ भार्या लाचार ।

प्रिये! उठौलहुँ कियै पाप वा
पुण्यक ई रसहीन कथा
सत्य कहू, ईर्ष्याक अनल की,
धधकि बनल अछि हियक जथा ?

हम लङ्काधिप, अन्त:पुरमे
सुन्दर नारिक अछि ढेरी
ई अनिंद्य सुंदरी आइसँ प्रिये !
अहीं केर छथि चेरी ।

नहि अछि अनुचित शक्तिमान हित
ओ अनेक पत्नी राखय
शक्ति बलेँ ओ स्त्रीक हरण कए
अपन राज ल' क' आबय ।

धर्म बुझै छी अहाँ बहुत त' कहू कि
हम स्त्री-स्पर्श कयल
स्वीकृति पाओल हुनक न, तेँ की
हम न एखन धरि धैर्य धयल ?

आर कहू प्रिय प्राणवल्लभे!
ओ की कएलक उचित विचार
अपमानित कए हमर बहिनकेँ
ओ ठनलक अछि अपने रार !

रक्ष संस्कृतिक हम छी पोषक
भोग-विलास न एहि ठाँ निन्द्य
शक्ति जकर जतबहि बेशी अछि
मात्र ओएह होइत अछि वन्द्य ।

तजू कथा, चिन्ताक मेघसँ
श्याम भेल सुन्दर आनन
केओ आबय वा जाइ मुदा
शोभित सदैव अहँ उर-आसन ।

बूझल, निकट पहुँचि आयल अछि
सर्वनाश सत्वर गतियेँ
जाइछ प्राण अवश्य बादमे
भ्रष्ट पूर्व होइछ मतिए ।

शिवकृपाभाग ओ मूर्त दंभ
अनुचित पथ चलइत भेल मगन
धन-बल-संग्रह, मदमत्त सदा
रंग-राग जलधि टा रहल लगन ।

अन्याय भेल सीते ! असह्य,
हे देवि करू अपराध क्षमा
के पुरुष सुनै अछि सहज मने
पत्नीक शुभाशुभ बात कथा?

के पाबि सकल फल नीक
कि कएलक जीवनमे अपमान त्रिया
भेल स्वयं नष्ट, अरिजन-परिजन
सभ सङ्कटमे, काँपैछ हिया ।।

लङ्कामे सम्मान स्त्रीक हो,
रहल, कतय हमरा वशमे
पुत्र इन्द्रजित हाय ! प्राणप्रिय
आइ गेल यम केर मुखमे ।

मृत्यु- ग्रासमे मात्र वैह नहि
सभ लङ्का केर वीर
अनाचार भूपति कएलनि
पुरनारि उठाबथि पीर ।

गेलथि आइ तजि प्राण,
स्वर्णनगरी अतिशय श्रीहीन
सुत-स्वामी केर मृत्यु देखि स्त्री
व्यथा-जलधिमे लीन ।

पीड़ा, कुण्ठा, वा कि हताशा-
भार दबल, लंकेश- प्रिया
ई विकराल समय, सभ स्वाहा,
देखि रहल छथि थामि हिया ।

आभा झा

आवासीय पता:
116 बी, अर्जुन नगर, बी-6
सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029

संपर्क:
9871053391

ई-मेल:
abhajha15@gmail.com

कार्यालयीय पता :
गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय
ग्रीनपार्क, नई दिल्ली-11001

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी., बी.एड., साहित्याचार्य

जन्म तिथि : 15-05-1966

वृत्ति : 9 सितम्बर 1994 सँ दिल्ली सरकार मे बतौर संस्कृत शिक्षक कार्यरत। सम्प्रति गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क मे संस्कृत प्रवक्ता (पी.जी.टी.) क पद पर आसीन।

संस्कृतमे प्रकाशित कृति-

व्याकरण-वैभवम्, भाग-1 (कक्षा-5)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-2 (कक्षा-6)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-3 (कक्षा-7)
व्याकरण-वैभवम्, भाग-4 (कक्षा-8)

हिन्दीमे प्रकाशित कृति-

झड़ते फूल (काव्य-संग्रह) 2021 ई.

मैथिलीमे प्रकाशित कृति-

कने हमरो सूनू (काव्य-संग्रह) 2020 ई.
प्रतीक्षा (कथा-संग्रह) 2020 ई.
सिनेहक दाम (बीहनि कथा-संग्रह) 2020 ई.
चिनबार (काव्य-संग्रह) 2021 ई.
आलोचनाक वातायन (आलोचना) 2022 ई.
हम, अहाँ आ मैथिली (आलेख-संग्रह) 2023 ई.
सीताक स्वर (श्रृंखलावद्ध काव्य) 2023 ई.
बजितथि जँ उर्मिला (दीर्घ कविता) 2024 ई.
ध्यान धरू सदानीरा (कविता-संग्रह) 2025 ई.

संस्कृत, हिन्दी एवं मैथिली भाषा मे कथा कविता, लघुनाटक, आलोचना आदि विभिन्न विधाक साहित्य रचनामे प्रवृत्त। विभिन्न पत्र-पत्रिकादि मे हिन्दी आ मैथिली मे कविता, कहानी, आलोचना आदि प्रकाशित। संस्कृत अकादमी सँ अनेक शोध निबंध, कथा, लघु नाटक, श्लोक आदि प्रकाशित। 1999 ई. सँ एनसीईआरटी आ एससीईआरटी मे रिसोर्स पर्सनक रूपमे विभिन्न पाठ्यपुस्तक, व्याकरण पुस्तक आ शिक्षक संदर्शिका-लेखन मे योगदान। 2000 ई. सँ शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा शिक्षक सभक हेतु आयोजित क्षमता सम्वर्द्धन कार्यशाला मे रिसोर्स पर्सनक दायित्व निर्वहण।

ISBN 978-93-47639-29-6

9 789347 639296

मूल्य : ₹200/-

मैत्रेयी प्रकाशन
बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
ई-मेल : maitreyipublication@gmail.com